साप्ताहिक

डाक पंजीयनः म.प्र./भोपाल/4-479/2019-21

RNI-MPHIN/2015/72544

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार 24-30 जनवरी 2022, वर्ष-7, अंक-43

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

साढ़े छह लाख किसानों से समर्थन पर खरीदा धान, किसानों को 5 हजार करोड़ रुपए का हुआ भुगतान

मध्य प्रदेश ने धान खरीद में अपना ही रिकॉर्ड तोड़ा

संवाददाता, भोपाल।

मध्य प्रदेश में धान का क्षेत्र धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है। इसके कारण समर्थन मूल्य पर उपार्जन भी बढ़ रहा है। इस बार प्रदेश ने 45 लाख टन से अधिक धान का उपार्जन करके अपना ही रिकॉर्ड तोड़ दिया है। किसानों को चार हजार 877 करोड़ रुपए का भुगतान किया है। समर्थन मूल्य पर धान बेचने के लिए आठ लाख 33 हजार 865 किसानों ने पंजीयन कराया था। इनमें से छह लाख 54 हजार किसानों ने राज्य नागरिक आपूर्ति निगम और राज्य सहकारी विपणन संघ को धान बेचा है। प्रदेश में इस बार 35 लाख हेक्टेयर से ज्यादा क्षेत्र में धान की बोवनी की गई थी।

खाद्य, नागरिक आपूर्ति विभाग ने 45 लाख टन धान खरीदने के हिसाब से तैयारी की थी। आठ लाख 33 हजार 865 किसानों ने समर्थन मूल्य (प्रति क्विंटल एक हजार 940) पर फसल बेचने के लिए पंजीयन कराया था। 20 जनवरी को उपार्जन की प्रक्रिया पूरी हो गई। कुछ जिलों में जिन किसानों ने पंजीयन कराया था और बारिश की वजह से उपज नहीं बेच पाए थे, उन्हें विशेष अनुमति दी गई है।

पिछले साल 37 लाख टन खरीदी थी धान

प्रदेश में समर्थन मूल्य पर पिछले साल पांच लाख 80 हजार किसानों से 37 लाख 27 हजार टन धान खरीदी गई थी। इसके पहले 2019-20 में 25.97 लाख टन धान खरीदी थी।

छह लाख 54 हजार 591 किसानों से रिकार्ड 45 लाख 43 हजार टन धान खरीदी जा चुकी है। चार हजार 877 करोड़ का भुगतान किसानों को हो चुका है। बाकी का भुगतान भी कराया जा रहा है। इस बार सेंट्रल पूल में दस लाख टन से ज्यादा चावल दिया जाएगा। अब पूरा ध्यान धान की मिलिंग पर है।

फैज अहमद किदवई, प्रमुख सचिव, कृषि विभाग

मध्यप्रदेश ने न्यूनतम समर्थन पर धान की खरीद का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। गेहूं हो या फिर धान प्रदेश में रिकॉर्ड खरीद हुई है। मिलिंग से जुड़े मुद्दों का समाधान भी जल्द होगा। किसानों को पांच हजार करोड़ का भुगतान भी हो चुका है। पिछले साल प्रदेश ने 25.86 लाख टन धान खरीदकर रिकॉर्ड बनाया था।

अभिजीत अग्रवाल, प्रबंध संचालक, खाद्य नागरिक आपूर्ति निगम

मध्य प्रदेश में ओलावृष्टि की 25 जिलों से आई रिपोर्ट

एक लाख 67 हजार 201 किसानों की फसल बर्बाद

संवाददाता, भोपाल।

मध्य प्रदेश में ओलावृष्टि से रबी फसलों को पहुंचे नुकसान के आकलन का सर्वे कराया जा रहा है। अभी 25 जिलों से प्रारंभिक रिपोर्ट आई है। इसमें फसल नुकसान का क्षेत्र (रकबा) डेढ़ लाख हेक्टेयर को पार कर गया है। 70 तहसीलों के एक हजार 157 गांवों के एक लाख 67 हजार 201 किसानों की फसल बर्बाद हुई है। आकलन के अनुसार किसानों को राजस्व पुस्तक परिपत्र के प्रविधान अनुसार आर्थिक सहायता देने के लिए 284 करोड़ रुपए से अधिक की जरूरत पड़ेगी। यह राशि सभी जिलों को आपदा राहत फंड से ग्लोबल हेड में उपलब्ध कराई जाएगी। प्रदेश में छह से 10 जनवरी के बीच ओलावृष्टि से रबी फसलें प्रभावित हुई हैं। राजस्व विभाग के अधिकारियों ने बताया कि सर्वे रिपोर्ट के बाद दावे-आपत्तियों का निराकरण करके किसानों को सहायता देने के लिए अंतिम आदेश जारी किए जाएंगे। सर्वाधिक 14 हजार 289 किसान पृथ्वीपुर तहसील में प्रभावित हुए हैं। वहीं, कोलारस में नौ हजार 420, घाटीगांव में छह हजार 455, चिनौर में पांच हजार 562 किसान प्रभावित हुए हैं।

फसल नुकसान का रकबा डेढ़ लाख हेक्टेयर के पार

284 करोड़ से अधिक राहत राशि बांटने में लगेंगे

इन जिलों में फसलें प्रभावित

जिला	गांव	छिंदवाड़ा	45
रायसेन	16	मंडला	14
राजगढ़	61	सिवनी	198
विदिशा	18	बैतूल	09
भिंड	23	हरदा	51
ग्वालियर	59	सतना	02
अशोकनगर	51	सागर	167
शिवपुरी	96	टीकमगढ़	03
दतिया	06	निवाड़ी	55
गुना	133	उज्जैन	17
धार	06	मंदसौर	31
झाबुआ	29	नीमच	10
बालाघाट	06	रतलाम	51

किसान प्राकृतिक खेती की ओर लौटें

भोपाल। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि देवास जिले की महिला स्व-सहायता समूह की बहनों ने बांस उत्पादन करने का बीड़ा उठाया है। यह महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। समूह की महिलाओं ने एक हजार एकड़ जमीन में बांस उत्पादन का कार्य हाथ में लिया है। प्रदेश के महिला स्व-सहायता समूहों को गणवेश सिलाई का कार्य दिया गया था। इस कार्य को उन्होंने बखूबी करके दिखाया है। उन्होंने कहा कि लाड़ली लक्ष्मी योजना से बेटियां लखपति हो रही है। 40 लाख बेटियां मप्र की लखपति हैं। साल 2012-2013 में एक हजार बेटों पर बेटी 912 बेटियां पैदा होती है। इस साल भारत सरकार के आकड़ों के मुताबिक अब मप्र में 956 बेटियां जन्म ले रही हैं। महिला सशक्तिकरण से बहनों की जिंदगी बदली है। बांस के रोपण के कार्य में महिलाओं को जोड़कर सशक्त बनाया जा रहा है। सीएम ने यह भी घोषणा की कि 2020 की फसल बीमा राशि का पैसा इस माह मैं डाल दूंगा। ज्यादा से ज्यादा फरवरी के पहले सप्ताह में आ जाएगा। किसान चिंता न करें। मुख्यमंत्री ने किसानों से आह्वान किया कि वे प्राकृतिक खेती की ओर लौटें। उन्होंने कहा कि वे स्वयं अब

» 2020 की फसल बीमा राशि फरवरी में किसानों को मिलेगी

» देवास में सीएम शिवराज सिंह ने की घोषणा और आह्वान

जैविक अमरुद की खेती से किसानों का बदला जायका

संजय शर्मा, खरगोन।

खरगोन जिले के कसरावद में जैविक अमरूद की खेती की ओर किसानों का रुझान बढ़ रहा है। कसरावद के जैविक अमरुद की डिमांड दिल्ली, यूपी और गुजरात में भारी मात्रा में है। टोंक मंडी में 40 से 50 रुपए किलो यह अमरुद बिक रहा। किसानों को प्रति एकड़ डेढ़ से दो लाख रुपए का फायदा भी हो रहा है। जैविक खेती से किसानों को फसल की क्वालिटी और उत्पादन अधिक हो रहा है। इसके साथ ही नुकसान भी काफी कम हो रहा है। रासायनिक खादों के छिड़काव का बड़ा खर्च कम होकर सस्ते देशी जैविक खाद से किसान को अधिक लाभ मिल रहा है। सबसे बड़ा लाभ स्वास्थ्य की दृष्टि से आमजन को भी है। इसी कारण खरगोन का ये अमरूद की दिल्ली, यूपी और गुजरात में अच्छी मांग बनी हुई है। किसान को इस वर्ष 15 रुपए किलो अधिक फायदा मिल रहा है। किसान की जैविक तरीके को कुछ दिनों पहले उद्यानिकी मंत्री भारत सिंह कुशवाह भी किसानों के खेत देखने आए थे। उन्होंने जैविक तरीके की तारीफ कर कृषि विभाग के अधिकारियों को जैविक अमरूद की खेती को बढ़ावा देने के निर्देश दिए थे।

दूसरे राज्यों में कसरावद के जैविक अमरूद की डिमांड

कम गिरे ओले तो प्रशासन मान ही नहीं रहा नुकसान, विजयपुर के आधा दर्जन गांवों के किसान प्रभावित

श्योपुर में टमाटर और सरसों की फसल चौपट

संवाददाता, श्योपुर।

जिले में बेमौसम बारिश और हल्के ओले गिरने से प्रशासन ने कोई नुकसान नहीं माना है। हालांकि विजयपुर क्षेत्र के आधा दर्जन गांवों में करीब 220 हेक्टेयर सरसों, टमाटर और अजवाइन की फसल प्रभावित हुई है। सरसों में 15 से 20 और टमाटर-अजवाइन की फसल में 20 से 30 फीसद नुकसान माना है। इधर, श्योपुर क्षेत्र के कुछ गांवों में ओले गिरने से फसल तो प्रभावित हुई हैं, लेकिन प्रशासन ने यहां नुकसान नहीं माना है। किसान भी फसल नुकसान को लेकर कुछ भी कहने से बच रहे हैं। ओले-बारिश और अन्य आपदा से राहत दिलाने वाली प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में भी किसानों ने अरुचि दिखाई है। जिले में 1 लाख 3 हजार किसानों में से महज 12 हजार 888 किसानों ने ही बीमा कराया है। इसके पीछे बीमा कंपनियों से दी जाने वाली परेशानियां भी बड़ा कारण रहा है। श्योपुर विकासखंड के ऊंचाखेड़ा, जवासा, आवनी, सेवापुरा, दांतरदाकलां, दलारनाकलां, माखनाखेड़ली, ईचनाखेड़ली, टांगनी और बिठालपुर और विजयपुर के नयागांव, कींजरी, बड़ौदाकला, सिमरई, चकबड़ौदा, मोहनपुर, गसवानी और चिलवानी में ओलों की हल्के छर्रे गिरे थे। बारिश के बाद कृषि विभाग और राजस्व विभाग ने सर्वे किया, लेकिन श्योपुर विकासखंड के एक भी गांव में नुकसान नहीं माना है। इधर किसानों के खेतों में बर्बाद हुई फसलें नुकसान को बयां कर रही हैं।

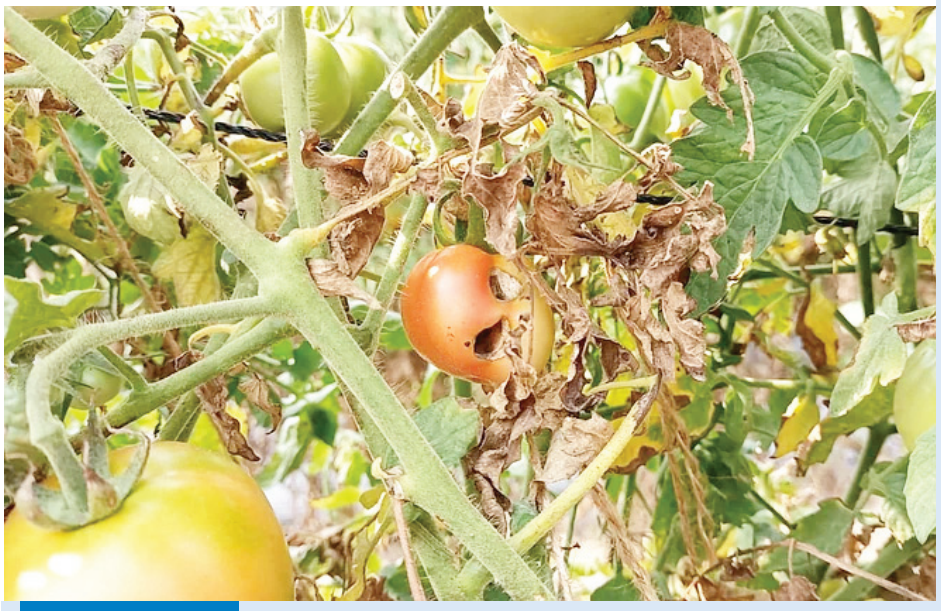

किसानों को सता रहा नुकसान का डर

कृषि विभाग ने सर्वे के बाद विजयपुर क्षेत्र के आधा दर्जन गांव में 220 हेक्टेयर में नुकसान माना है। इसमें सरसों में 120 हेक्टेयर, टमाटर में 50 हेक्टेयर और अजवाइन में 50 हेक्टेयर में दांतरदाकलां, दलारनाकलां, माखनाखेड़ली, ईचनाखेड़ली, टांगनी और बिठालपुर और विजयपुर के नयागांव, कींजरी, बड़ौदाकला, सिमरई, चकबड़ौदा, मोहनपुर, गसवानी और चिलवानी में नुकसान माना है। इसमें सरसों में 15 से 20 फीसद और टमाटर-अजवाइन में 20 से 30 फीसद नुकसान माना है।

जिले में बारिश के साथ ही कुछ सेकंड ही ओले गिरे थे। इससे फसलों को कोई नुकसान नहीं है। विजयपुर क्षेत्र के कुछ गांव में सरसों, टमाटर को 15 से 20 फीसद नुकसान है। यह मुआवजा की श्रेणी में नहीं आता है।
पी गुजरे, उपसंचालक कृषि विभाग, श्योपुर

फसल बीमा से भंग हो रहा मोह

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना श्योपुर में किसानों को रास नहीं आ रही है। सरकार द्वारा फसल बीमा योजना को स्वैच्छिक कर देने का असर रबी की फसल में देखने को मिला है। जिले में दर्ज 1 लाख 3 हजार किसानों में से महज 12 हजार 888 किसानों ने पीएम फसल योजना में बीमा कराया है। बीमित राशि 1 करोड़ 56 लाख 605 रुपए है। यह किसान वह हैं, जिन्होंने किसान क्रेडिट कार्ड ले रखा है। जबकि 90 हजार 112 किसानों ने फसल बीमा योजना से तौबा कर लिया। वहीं खरीफ की फसल में 25 हजार 851 किसानों ने बीमा कराया था।

लाखों की नौकरी छोड़ गांव लौटा आईआईटी ग्रेजुएट

खीरा और शिमला मिर्च ने बनाया लखपति

खीरा और शिमला मिर्च ने बनाया लखपति

संवाददाता, इंदौर।

आमतौर पर आईआईटी ग्रेजुएट यानी किसी मल्टीनेशनल कंपनी में लाखों के पैकेज पर नौकरी, लेकिन इंदौर में सिमरोल के पास जगजीवन गांव में रहने वाले शुभम चौहान ने गुवाहाटी आईआईटी से इलेक्ट्रॉनिक टेलीकम्युनिकेशन में डिग्री हासिल करने के बाद भी कुछ और राह चुनी। 2017 में छह महीने दुनिया की बड़ी आईटी कंपनियों में से एक एक्सचेंजर में नौ लाख रुपए के पैकेज पर काम किया। पढ़ाई का कर्ज 49 लाख रुपए चुकाया और फिर नौकरी छोड़ खेती के इरादे से गांव की राह पकड़ी। चार बीघा जमीन की कुल जमा पूंजी पर लोन लेकर एक पॉली हाउस खोला। महज दो साल बाद वह सालाना 16 से 18 लाख रुपए की शिमला मिर्च और खीरा की पैदावार कर रहे हैं। गुणवत्ता इतनी अच्छी कि जयपुर, दिल्ली, वड़ोदरा, अहमदाबाद की मंडियों से एडवांस बुकिंग हो रही है। एक एकड़ के पॉली हाउस में शुभम सालाना 150 टन तक खीरा की पैदावार कर लेते हैं। जमीन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए रोटेशन में खीरे के अलावा शिमला मिर्च भी लगाते हैं। शुभम कहते हैं, गांव में अपना कुछ करने का सपना था, इसलिए आईटी की नौकरी छोड़ दी।

आपदा को अवसर बनाया

कोविड में मंडियां बंद होने से कारोबार बंद हुआ। लोन की किस्त ड्यू हो गई। एक एकड़ के पॉली हाउस से कर्ज उतारना आसान नहीं था। नए पॉली हाउस में 40 लाख का खर्च था। हिम्मत नहीं हारी। अनलॉक होते ही पुराना सामान खरीदकर बची हुई जमीन पर खुद ही देसी पॉली हाउस जैसा स्ट्रक्चर तैयार किया है। उसमें खीरे की फसल अगले कुछ दिनों में तैयार हो जाएगी।

बैंगन से सात महीने में की अच्छी कमाई

इधर, बैंगन की खेती भी नकदी फसल है। रोग लगने के बाद भी ये फसल सर्वाइव कर जाती है। बस, समय पर कीटनाशक डालने पड़ते हैं। बैंगन की फसल आठ महीने में तैयार हो जाती है। इस बार बैंगन के रेट 7 रुपए से 35 रुपए प्रति किलो की रही है। छह एकड़ में बैंगन लगाकर सात महीने में जबलपुर के प्रगतिशील किसान अमित दासने तीन लाख रुपए बचाए। अमित दास ने बताया कि बैंगन की खेती करने से पहले तरबूज और खरबूजा की खेती की थी। 6 एकड़ में मैंने इसकी खेती की थी। इसके लिए ड्रिप इरिगेशन लगाया था साथ ही, मल्चिंग कर रखी थी। इस कारण बैंगन की रोपाई में इस कारण खर्च कम आया था। जून में रोपाई कर दी थी। दो रुपए में एक पौधा मिला था। एक एकड़ में 6 हजार पौधे लगे थे। पौधों से पौधों की दूरी 30 सेमी और रो की दूरी चार से पांच फीट रखनी होती है। दो एकड़ में ग्रीन बैंगन और चार एकड़ में भर्ता बैंगन (गोल) लगाया था। ड्रिप इरिगेशन में 80 हजार रुपए प्रति एकड़ का खर्च आता है। वहीं, मल्चिंग का 400 मीटर बंडल 1400 रुपए में आता है। 6 बंडल एक एकड़ के लिए चाहिए। इसे लगाने में तीन हजार रुपए प्रति एकड़ का खर्च आता है। बैंगन से मार्च-अप्रैल तक उत्पादन होता है। बैंगन में बारिश को छोड़कर सामान्य दिनों में हर दो दिन में करना पड़ता है। ड्रिप इरिगेशन से कम पानी में सिंचाई हो जाती है। इसी से खाद भी देते हैं।

गोपालन प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न

प्रशिक्षण में दी गई गौ-पालन से संबंधित खास जानकारी

संवाददाता, जबलपुर। विगत दिवस योगमणि गौशाला एवं पर्यावरण समिति तिलवारा में गोपालन प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न हुई। प्रशिक्षण कार्यशाला में डॉ सूरज दास ने गोशाला से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां सभी के सामने रखी। उन्होंने सभी को जानकारी दी कि गोशाला में पानी की व्यवस्था, गाय के आहार के भंडारण की व्यवस्था ठीक रहना चाहिए। भूसा समय पर ही स्टोर कर लेना चाहिए। हरा चारा लगाना चाहिए। गोशाला में सफाई की व्यवस्था, गायों की चिकित्सा की व्यवस्था आदि विषयों पर उन्होंने सभी को महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

कार्यशाला में मध्यप्रदेश गोपालन एवं पशुधन संवर्धन बोर्ड की कार्य परिषद के अध्यक्ष परम पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी अखिलेश्वरानंद गिरि ने भी गोशाला प्रबंधन के सप्त बिंदुओं पर सभी को जानकारी प्रदान की। उन्होंने गोपालकों एवं गोसेवकों से आग्रह किया कि गोशाला के कार्य में सभी को तन मन धन पूर्वक लगना चाहिए। समर्पण भाव के साथ हमको गाय का पालन करना चाहिए। गाय सहज, सरल एवं मातृवत् व्यवहार करती है, गाय का नाम रख दो नाम लेकर बुलाओ तो अपना नाम सुन कर के वह दौड़ी आती है। योगमणि गोशाला एवं पर्यावरण समिति की *अध्यक्ष डॉ श्रीमती शिरीष जामदार जी* ने भी गोशाला से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां सभी को दी। गोशाला के श्याम चौबे ने सभी का आभार व्यक्त किया। प्रशिक्षण कार्यशाला में योगमणि गोशाला एवं पर्यावरण समिति, स्वर्गीय श्री रामनारायण समाज उत्थान समिति एवं अन्य संस्थाओं के गोपालक एवं गोसेवक उपस्थित थे। जिनमें प्रमुख रूप से *वरिष्ट समाजसेवी डॉ जितेंद्र जामदार जी*, डॉ श्रीमती अनुराधा पांडेय जी, शिवनारायण पटेल जी, डॉ राजेश जायसवाल जी, सपना पटेल जी, स्वामी मनीषा दास जी, काजल जी, नेहा जी, बबली तिवारी जी, सत्य प्रकाश यादव जी, प्रवीण विप्रदास जी, संजय दुल्हानी जी, दसईं लाल झारिया जी, रमेश कुशवाहा जी, राजू जी आदि उपस्थित रहे।

- आईसीएआर ने मप्र के किसान अजय का किया चयन

जैविक कोर्स के लिए बनी प्रगतिशील किसानों की कमेटी

भोपाल। संवाददाता

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) ने जैविक पाठ्यक्रम के लिए कृषि विशेषज्ञों और जैविक कृषि पद्धति अपना रहे प्रगतिशील किसानों की कमेटी बनाई है। इस कमेटी में मप्र के इंदौर से एक और राजस्थान के दो किसानों को शामिल किया गया है, जो पिछले कई वर्षों से प्राकृतिक खेती करते आ रहे हैं। पद्मश्री हुकुमचंद पाटीदार राजस्थान के झालावाड़ के नामित मानपुरा गांव के 65 वर्षीय किसान हुकुमचंद पिछले कई वर्षों से प्राकृतिक खेती करते आ रहे हैं। इसके लिए उनको साल 2018 में राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने पद्मश्री से सम्मानित किया था।

वहीं राजस्थान के जोधपुर जिला मुख्यालय से 40 किमी दूर मथानिया गांव में 60 एकड़ में 71 वर्षीय रतनलाल डागा प्राकृतिक खेती करते हैं। उनके फार्म पर अनाज से लेकर, सब्जी, फल और मसालों तक की खेती होती है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने प्राकृतिक खेती के पाठ्यक्रम को शामिल करने के लिए 12 सदस्यों की कमेटी बनायी है। केंद्रीय कृषि विवि, इंफाल के कुलपति डॉ. अनुपम मिश्रा इस कमेटी के अध्यक्ष हैं। कमेटी के सदस्यों में गोविंद वल्लभ पंत कृषि विवि की कृषि वैज्ञानिक डॉ. सुनीता पांडेय, आनंद कृषि विवि के

माइक्रोबायोलॉजी वैज्ञानिक डॉ. आरवी व्यास, महाराणा प्रताप कृषि विवि के शोध निदेशक डॉ. एसके शर्मा, राजमाता विजयाराज सिंधिया कृषि विवि के पूर्व कुलपति डॉ. प्रकाश शास्त्री, केंद्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी) के वैज्ञानिक डॉ. अरुण कुमार शर्मा, भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एन रविशंकर, तमिलनाडु कृषि विवि के कृषि वैज्ञानिक डॉ. ई सोमासुंदरम, सीएके हिमाचल प्रदेश कृषि विवि के प्राकृतिक खेती के प्रो. डॉ. रामेश्वर कुमार, प्रगतिशील किसान रतन डागा, पद्मश्री हुकुमचंद पाटीदार, इंदौर के अजय केलकर, ओडिशा सरकार के पूर्व संयुक्त निदेशक (पशु चिकित्सा) डॉ. बलराम साहू शामिल हैं। कमेटी के सभी सदस्य दो महीनों में आईसीएआर को अपनी रिपोर्ट देंगे, जिसके आधार पर ग्रेजुएट, पोस्ट ग्रेजुएट और डिप्लोमा कोर्स के सिलेबस में प्राकृतिक खेती को शामिल किया जाएगा।

प्राकृतिक वनस्पतियों को कृषि में शामिल किया जाना चाहिए। गौवंश का मतलब गौवंश के आदान को कृषि में शामिल किया जाए, इससे गौवंश को बचाने में भी सफल होंगे। साथ ही प्राकृतिक खेती की तरफ हमें आगे बढ़ना चाहिए।
अजय केलकर, प्रगतिशील किसान, इंदौर

जो अभी खेती हो रही है, यह खेती आगे चलकर बहुत खतरनाक साबित होगी, क्योंकि जो खेत की मिट्टी है, उसमें धीरे-धीरे जीवांश की मात्रा खत्म हो रही है खेती की लागत बढ़ती जाएगी। हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा।
डॉ. प्रकाश शास्त्री, पूर्व कुलपति, राजमाता विजयाराज सिंधिया कृषि विवि

-चार हजार ग्रामों में घरों तक स्वच्छ पानी पहुंचाने के कार्यों का होगा शुभारंभ

गांव में टोंटी से पानी पहुंचाने की पीएम की पहल ऐतिहासिक

भोपाल। संवाददाता

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि ग्रामों में पेयजल योजनाओं के संचालन और संधारण में ग्राम जल एवं स्वच्छता समिति, दीनदयाल समिति और स्व-सहायता समूहों का सहयोग प्राप्त किया जाए। जल जीवन मिशन की लागत राशि के निर्धारित प्रतिशत का अंशदान उपयोगकर्ताओं से

प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रेरित किया जाए। प्रदेश के 52 जिलों में 4019 हर-घर जल घोषित ग्रामों में कार्य पूरे होना महत्वपूर्ण उपलब्धि है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा देश के ग्रामों में घरों में टोंटी से जल प्रदाय के कार्य करवाना साधारण बात नहीं, बल्कि नागरिकों की बुनियादी सुविधाओं में से एक स्वच्छ पेयजल की घर तक आपूर्ति की सुनिश्चित व्यवस्था बनाने का ऐतिहासिक कार्य है। सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित कर हर-घर जल घोषित ग्रामों में जल प्रदाय का विधिवत शुभारंभ किया जाए।

समय पर पूर्ण किए जाए

मुख्यमंत्री ने मंत्रालय से वीसी द्वारा कलेक्टर्स-कमिश्नर्स कॉन्फ्रेंस के द्वितीय-सत्र में अधिकारियों को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि समूह जल प्रदाय योजनाओं, एकल ग्राम नलजल योजनाओं के कार्य गुणवत्ता के साथ समय पर पूर्ण किए जाएं। प्रगतिरत रेट्रोफिटिंग एकल ग्राम नलजल योजना के कार्य 31 मार्च 2022 तक पूर्ण किए जाएं। पूर्ण योजनाओं के लोकार्पण से अधिक से अधिक आमजन एवं जन-प्रतिनिधियों को भी वर्चुअली जोड़ने का प्रयास हो।

जल ग्रामों का हो भौतिक सत्यापन

मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्र द्वारा निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार ग्राम सभाओं के आयोजन कर हर-घर जल ग्रामों के भौतिक सत्यापन, प्रमाण-पत्र जारी करने, फोटोग्राफ और वीडियो वेबसाइट पर अपलोड किए जाएं। नलों की टोंटी आदि न टूटे, इसके लिए जन-जागरूकता आवयक है। पंचायत सचिव और अन्य प्रतिनिधि जल जीवन मिशन के कार्यों और योजना के संधारण के लिए सहयोग प्रदान करें। कॉन्फ्रेंस में बताया गया कि जल जीवन मिशन के कार्यों के लिए लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग ने मैदानी अधिकारियों को सभी कार्यों को पूर्ण करने के लिए निर्देश जारी किए हैं।

धान उपार्जन की समीक्षा

धान उपार्जन के संबंध में निर्देश दिए गए कि कृषकों से खरीदे गए धान की राशि का भुगतान समय पर किया जाए। मुख्यमंत्री ने दतिया में धान खरीदी कार्य को व्यवस्थित करने, अवैध रूप से उत्तरप्रदेश से आने वाले क्रांति धान के विक्रय पर अंकुश के प्रयासों के लिए कलेक्टर दतिया को बधाई दी। मुख्यमंत्री ने कहा इस मॉडल को अन्य जिले भी अपनाएं। सभी जिलों में किसानों को आवश्यक सुविधाएं मिलें और उपार्जित खाद्यान की राशि का भुगतान सुनिश्चित किया जाए। कलेक्टर्स जिलों में भंडारण व्यवस्था की समीक्षा के साथ ही आगामी उपार्जन कार्यों की तैयारी भी कर लें।

उपार्जित खाद्यान्न सुरक्षित

प्रमुख सचिव खाद्य फैज अहमद किदवई ने बताया कि हाल ही में प्रदेश के कुछ जिलों में वर्षा हुई है, लेकिन उपार्जित खाद्यान्न सुरक्षित है और कहीं से भी किसी क्षति का समाचार नहीं मिला है। उन्होंने बताया कि धान के लिए 8 लाख 33 हजार 865, ज्वार के लिए 19 हजार 923 और बाजरा के लिए 51 हजार 670 कृषकों का पंजीयन किया गया। प्रदेश में 43 लाख 64 हजार 984 मीट्रिक टन धान, 32 हजार 737 मीट्रिक टन ज्वार और 11 हजार 566 मीट्रिक टन बाजरा की खरीदी की गई है। समर्थन मूल्य पर किसानों से खरीदी के बाद धान के लिए 4 हजार 877 करोड़, ज्वार एवं बाजरा के लिए 70 करोड़ की राशि का भुगतान किया गया है।

सुकन्या समृद्धि योजनाः सात वर्ष पूरे होने पर सीएम ने दी बधाई

बेटियों के सपनों को लगाएंगे पंख

-मध्यप्रदेश में करीब 23 लाख खाते खुलवाकर बनाया रिकॉर्ड

भोपाल। संवाददाता

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए उनके स्वप्नों को साकार करना हम सभी का दायित्व है। केन्द्र सरकार, राज्य सरकार और आम नागरिक मिलकर बेटियों के सपनों को पंख लगाएंगे। मध्यप्रदेश ने सुकन्या समृद्धि योजना में करीब 23 लाख खाते खुलवाने की उपलब्धि अर्जित की है। निश्चित ही बेटियों में बचत की प्रवृत्ति का विकास हो रहा है। उनके सशक्तिकरण के लिए निरंतर प्रयास होंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा बेटियों को सशक्त बनाने एवं उनका भविष्य सुरक्षित करने के उद्देश्य से शुरु की गई सुकन्या समृद्धि योजना के सफलतम सात वर्ष आज पूर्ण हो रहे हैं। निश्चित ही एक सार्थक योजना के सफल सात वर्ष पूर्ण होना हम सभी के लिए संतोष का विषय भी है। योजना की कामयाबी के लिए सभी सहयोगी नागरिक और परिवार बधाई के पात्र हैं।

23 लाख खुले खाते

मुख्यमंत्री ने कहा कि हाल ही में सुकन्या समृद्धि योजना के क्रियान्वयन का जो प्रतिवेदन सामने आया है, उसके अनुसार बेटियों के आर्थिक सशक्तिकरण और उन्हें आत्म-निर्भर बनाने की इस योजना में प्रदेश में अब तक 22 लाख 94 हजार से अधिक खाते खोले जा चुके हैं। समाज के सशक्तिकरण के लिए नारी का सशक्त होना अत्यंत आवश्यक है।

सुकन्या से होगा बेटियों का सशक्तिकरण

सीएम शिवराज ने कहा कि आज पैदा हुई बेटी कल समाज, प्रदेश और राष्ट्र को सशक्त बनाने में अपनी भूमिका निभा पाए इस उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा संचालित सुकन्या समृद्धि योजना मील का पत्थर साबित हुई है। आज बेटियां हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। हर मुकाम हासिल कर रही हैं। हम सभी मिलकर उन्हें आगे बढ़ने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करेंगे, तो वास्तविक अर्थों में बेटियों का निश्चित रूप से सशक्तिकरण होगा।

मोटे अनाजों को थाली और खेत में लाना होगा वापस

डॉ. सत्येंद्र पाल सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख
कृषि विज्ञान केंद्र, शिवपुरी

भारत दुनिया का सबसे बड़ा मिलेट (मोटे अनाज) उत्पादक देश है। राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, हरियाणा, गुजरात, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, झारखंड, तमिलनाडु, और तेलगांना आदि प्रमुख मोटे अनाज उत्पादक राज्य हैं। जबकि आसाम और बिहार में सबसे ज्यादा मोटे अनाजों की खपत होती है। देश में पैदा की जाने वाली मुख्य मिलेट फसलों में ज्वार, बाजरा और रागी का स्थान आता है। छोटी मिलेट फसलों में कोदो, कुटकी, सवां आदि की खेती की जाती है। जलवायु परिवर्तन के दृष्टिकोण से भी ये फसलें अत्यंत उपयोगी हैं जो कि सूखा सहनशील, अधिक तापमान, कम पानी की दशा में और कम उपजाऊ जमीन में भी आसानी से पैदा कर इनसे अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है। इसलिए इनको भविष्य की फसलें और सुपर फूड तक कहा जा रहा है।

पांरपरिक भारतीय अनाजों में स्वास्थ्य का खजाना छुपा है। ज्वार, बाजरा, रागी, कोदो और कुटकी जैसी पुरातन पांरपरिक फसलों को सुपर फूड कहा जाने लगा है। बीते कुछ सालों में कई ऐसी फसलें खेतों में और ऐसा खाना थाली में लौट आया है। जिन्हें कुछ वक्त पहले तक बिल्कुल भुला दिया गया था। मोटे अनाजों को खेत में और थाली में वापस लाने के लिए और इस पर लगे भूली हुई फसल के टैग को हटाने के लिए ठोस वैश्विक प्रयास की जरूरत है। साल 2018 को भारत में ईयर ऑफ मिलेट्स के रूप में मनाया गया था। भारत के प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए संयुक्त राष्ट्र ने साल 2023 को इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स के रूप में मनाने का फैसला किया है। इस दरम्यांन लोगों को मोटे अनाजों के प्रयोग से होने वाले स्वास्थ्य लाभ के बारे में जागरूक किया जाएगा। साथ ही इनकी खेती की उपयोगिता के बारे में किसानों को भी बताया जाएगा। मोटे अनाज कम उपजाऊ मिट्टी में भी अच्छी उपज दे सकते हैं और तुलनात्मक रूप से इनकों कीटनाशकों की उतनी जरूरत नहीं होती है। मोटे अनाज तेजी से चलन में लौट रहे हैं उन्हें सुपर फूड के तौर पर पहचाना जा रहा है। क्योंकि वह धरती के लिए, किसानों के लिए और हमारी और आपकी सेहत के लिए अच्छे हैं। मोटे अनाजों को अधिक पानी-सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। यह अधिक तापमान में भी आसानी से पैदा किए जा सकते हैं। दुनिया में सबसे ज्यादा मिलेट उत्पादन करने वालों में भारत, नाइजीरिया और चीन प्रमुख देश हैं। जो कि दुनियां का 55 फीसदी उत्पादन करते हैं जिसमें भारत कई सालों से दुनियां का मुख्य मिलेट उत्पादक देश है। देश में राजस्थान सबसे ज्यादा बाजरा पैदा करने वाला राज्य है जहां 7 मिलियन हेक्टेयर भूमि पर इसकी खेती की जाती है। मध्य प्रदेश में छोटे मोटे अनाज की सबसे ज्यादा क्षेत्रफल में खेती की जाती है। जिसमें मध्य प्रदेश 32.4, छत्तीसगढ़ 19.5, उत्तराखंड 8, महाराष्ट्र 7.8, गुजरात 5.3 और तमिलनाडु 3.9 फीसदी क्षेत्रफल में छोटी मिलेट फसलों की खेती की जाती है। देश में की जाने वाली ज्वार की खेती का 50 फीसदी रकबा अकेले महाराष्ट्र से आता है। कर्नाटक में सबसे ज्यादा रागी की खेती की जाती है। सामान्यत: मोटे अनाजों की सभी फसलों की कीमत सामान्य धान से ज्यादा ही रहती है। मोटे अनाज स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से भी अच्छे हैं, क्योंकि इनमें पौष्टिक तत्व अधिक मात्रा में होते हैं। रागी में पोटेशियम एवं कैल्शियम अन्य मिलेट फसलों की तुलना में ज्यादा है। कोदों में प्रोटीन 11, हल्की वसा 4.2, बहुत ज्यादा फाइवर 14.3 फीसदी के अलावा विटामिन-बी, नाइसिन, फोलिक एसिड, कैल्शियम, आयरन, पोटेशियम मैगनीशियम, जिंक आदि महत्वपूर्ण पौषक तत्व पाए जाते हैं। इसी प्रकार से बाजरा में प्रोटीन, फाइवर, मैगनीशियम, आयरन एवं कैल्शियम भरपूर मात्रा में पाया जाता है। अध्ययन के मुताबिक बाजरे से मधुमेह को नियंत्रित करने में मदद मिलती है और कोलेस्ट्रोल स्तर में सुधार होता है। यह कैल्शियम, आयरन और जिंक की कमी को दूर करते हैं। सबसे जरूरी बात यह है कि यह ग्लूटेन फ्री होते हैं। आज स्वास्थ्य विशेषज्ञ भी मोटे अनाजों को लेकर गहरी दिलचस्पी दिखा रहे हैं। भारत में करीब 8 करोड़ डायबिटीज के मरीज हैं। हर साल करीब 1.7 करोड़ लोग हृदय रोग के कारण दम तोड़ जाते हैं। देश में 33 लाख से अधिक बच्चे कुपोषण का शिकार हैं। जिसमें आधे से अधिक गंभीर रूप से कुपोषित हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने एक संबोधन में भारत से कुपोषण को खत्म करने के लिए मिलेट्स रिवोल्यूशन की बात कही थी। विशेषज्ञों का भी मानना है कि भारत के लिए असंभव कार्य नहीं होगा, क्योंकि सालों से मोटा अनाज भारतीयों के लिए भोजन का मुख्य स्रोत रहा है। मानव जाति को पुरातन समय से जिन खाद्यान्नों की जानकारी रही है वो ज्वार-बाजरा जैसे मोटे अनाज ही हैं। सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान भी बाजरा की खेती का उल्लेख मिलता है। भारत में 21 राज्यों में इनकी खेती की जाती है। प्रत्येक राज्य के अपने किस्म के मोटे अनाज हैं जो न सिर्फ उनकी खाद्य संस्कृति का हिस्सा हैं, बल्कि उनके धार्मिक अनुष्ठानों का भी भाग हैं। भारत प्रति वर्ष 1.4 करोड़ टन बाजरा की पैदावार करता है। इतना ही नहीं, भारत दुनियां का सबसे बड़ा बाजरा उत्पादक देश भी है। बीते 50 सालों में कृषि योग्य भूमि घटकर 3.8 करोड़ हेक्टेयर से 1.3 करोड़ हेक्टेयर ही रह गई है। इसी के साथ 1960 के दशक में होने वाली बाजरा की पैदावार आज 6 फीसदी पर आ गई है। उस समय तक भारत खाद्य सहायता प्राप्त कर रहा था और अपनी एक बड़ी आबादी के पोषण के लिए अनाज का आयात करता था। इसके बाद हरित क्रांति का आगाज हुआ और चावल-गेहूं की अधिक पैदावार वाली किस्मों को उगाना शुरू किया गया। भारत में 1960 और 2015 के बीच गेहूं का उत्पादन तीन गुना से अधिक हो गया और चावल के उत्पादन में 800 फीसदी की वृद्धि हुई। परंतु इस दौरान बाजरा जैसे मोटे अनाजों का उत्पादन कम ही बना रहा। बीते सालों में चावल-गेहूं की उपज बढ़ाने पर ज्यादा जोर दिया गया और इस दौरान बाजरा और कई दूसरे पारंपरिक खाद्यान्नों की उपेक्षा हुई। जिसकी वजह से उनका उत्पादन प्रभावित हुआ है। मोटे अनाजों को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार देश में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के तहत मिलेट मिशन संचालित कर रही है। मध्य प्रदेश सरकार छोटे मिलेट को बढ़ावा देने के लिए कोदो एवं कुटकी को बढ़ावा दे रही है। छत्तीसगढ़ सरकार ने राष्ट्रीय मिलेट शोध संस्थान, हैदराबाद के साथ समझोता करके राज्य में मिलेट मिशन का आगाज किया है। छत्तीसगढ़ सरकार की योजना राज्य को मिलेट हब के रूप में विकसित करने की है। छत्तीसगढ़ के आदिवासी तथा जंगली क्षेत्रों में कोदो, कुटकी तथा रागी की खेती बहुतायत में की जाती है, जो कि पौषण में काफी समृद्ध होती हैं। हालांकि छोटे मिलेट की कटाई-मजाई तथा थ्रैसिंग करना मुश्किल होता है। मोटे अनाजों को पकाना भी इतना आसान नहीं है। आज के समय में किसी के पास इतना समय भी नहीं है। इसी के चलते दशकों से इनका बेहद कम इस्तेमाल किया जा रहा है। बाजार ने भी इनकी उपेक्षा की है, लेकिन लोगों को यह जानना होगा कि उनकी थाली में अलग-अलग स्वाद और अलग-अलग तरह के पौषक तत्वों का होना बहुत जरूरी है। ऐसा करने के लिए भुला दिए गए मोटे अनाजों की फसलों पर भी चावल-गेहूं की तरह ही ध्यान देना होगा। देखा जा रहा है कि ज्वार, बाजरा, रागी, कुटकी, कोदो जैसे अनाज धीरे-धीरे चलन में लोट रहे हैं। कृषि विशेषज्ञों द्वारा मोटे आनाजों को दुबारा से चलन में लाने के लिए कई तरह के उपाय सुझाएं हैं। इन सुझावों के परिणाम भी अब दिखने लगे हैं। पिछले दो सालों में बाजरा की मांग में 146 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई है।

किसान प्याज की खेती कर अच्छा लाभ कमाएं

डॉ. एसके त्यागी
वैज्ञानिक (उद्यान विज्ञान),
कृषि विज्ञान केंद्र, खरगोन

प्याज सभी प्रकार की मिट्टीं में उगाई जा सकती है। सफल प्याज की खेती के लिए सबसे अच्छी मिट्टी दोमट और जलोढ़ हैं जिसमें समुचित जल निकासी के साथ अच्छी नमी धारण क्षमता और पर्याप्त कार्बनिक पदार्थ हों। प्याज की रोपाई के लिए दो-तीन जुताइयां कल्टीवेटर से करें। यदि खेत में ढेलें हो तो एक बार रोटावेटर चलाकर खेत को समतल कर लें। इसके बाद रोपाई के लिए क्यारियां बनाएं। प्याज के बीज की बोवनी खरीफ मौसम में मई के अंतिम सप्ताह से लेकर जून के मध्य तक करते हैं। प्याज की रबी फसल के लिए नर्सरी में बीज की बोवनी किसान नवंबर माह में करें।

प्याज की रोपाई के लिए पौध का चयन करते समय उचित ध्यान रखें। कम और अधिक आयु के पौध रोपाई के लिए नहीं लें। रोपाई के समय पौध के शीर्ष का एक तिहाई भाग काट दें जिससे उनकी अच्छी स्थापना हो सके। रोपाई के समय पंक्तियों के बीच 15 सेंमी और पौधों के बीच 10 सेंमी का अंतर हो। प्याज की फसल से भरपूर उत्पादन प्राप्त करने के लिए खाद एवं उर्वरकों का उपयोग मृदा परीक्षण की अनुशंसा के अनुसार करें। अच्छी फसल लेने के लिऐ 100 क्विंटल प्रति एकड़ अच्छी सड़ी गोबर खाद खेत की अंतिम जुताई के समय मिला दें। साथ में जैव उर्वरक ऐजोस्पाइरिलियम और पीएसबी जीवाणु की 2 किलो प्रति एकड़ की दर से मिट्टी में मिलाएं। प्याज को 50 किलो नत्रजन, 16 किलो फॉस्फोरस, 20 किलो पोटाश एवं 8 किलो सल्फर प्रति एकड़ की जरूरत होती है। इसके लिए लगभग 100 किलोग्राम सिंगल सुपर फास्फेट, 30 किलो यूरिया, 40 किलो मयूरेट ऑफ पोटाश प्रति एकड़ रोपाई के पूर्व दें। इसके बाद 35 किलो यूरिया प्रति एकड़ रोपाई के 30 दिन बाद तथा 35 किलो यूरिया रोपाई के 45 दिन बाद छिड़ककर दें या 12:32:16 50 किलो प्रति एकड़, अमोनियम सल्फेट 35 किलो प्रति एकड़, मयूरेट ऑफ पोटाश 35 किलो प्रति एकड़ रोपाई के पूर्व दें। इसके बाद 40 किलो यूरिया प्रति एकड़ रोपाई के 30 दिन बाद तथा 40 किलो यूरिया रोपाई के 45 दिन बाद छिड़ककर दें या 18:46:00 35 किलोग्राम प्रति एकड़, अमोनियम सल्फेट 35 किलो प्रति एकड़, मयूरेट ऑफ पोटाश 35 किलो प्रति एकड़ रोपाई के पूर्व दें। इसके बाद 35 किलो यूरिया प्रति एकड़ रोपाई के 30 दिन बाद तथा 35 किलो यूरिया रोपाई के 45 दिन बाद छिड़ककर दें। यदि मृदा में जिंक की कमी हो तो 4 किलो जिंक सल्फेट 33 प्रतिशत प्रति एकड़ बोवनी के पूर्व उपयोग करें। प्याज एवं लहसुन अनुशंधान निदेशालय में किए गए प्रयोगों के आधार पर, जैविक उर्वरक ऐजोस्पाइ रिलियम और फॉस्फोरस घोलने वाले जीवाणु की 2 किलो प्रति एकड़ की दर से प्याज फसल के लिए सिफारिश की गई है। ऐजोस्पाइ रिलियम जैविक नत्रजन स्थिरीकरण द्वारा मिट्टी में नत्रजन की उपलब्धता को बढ़ाते हैं और फॉस्फोरस घोलने वाले जीवाणु के इस्तेमाल से मृदा में मौजूद अनुपलब्ध फॉस्फोरस पौधों के लिए उपलब्ध होते हैं जिससे फॉस्फोरस उर्वरकों की क्षमता बढ़ती है। यदि वानस्पतिक वृद्धि कम हो तो 19:19:19 पानी में घुलनशील उर्वरक 1 किलो प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में घोल कर रोपाई के 15, 30 एवं 45 दिन बाद छिड़काव करें। इसके बाद 13:0:45 पानी में घुलनशील उर्वरक 1 किलो प्रति एकड़ 200 लीटर पानी मे घोलकर रोपाई के 60, 75 एवं 90 दिन बाद छिड़काव करें। अच्छी उपज व गुणवत्ता के लिए सूक्ष्म पोषक तत्वों का मिश्रण 200 ग्राम प्रति एकड़ 200 लीटर पानी मे घोलकर रोपाई के 45 और 60 दिन बाद छिड़काव करें। प्याज की फसल को सकरी एवं चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार नुकसान पहुंचाते हैं। प्याज में खरपतवारों से 40-80 प्रतिशत तक उपज में कमी दर्ज की गई है। रोपाई के 15 से 60 दिनों तक फसल से खरपतवारों की प्रतियोगिता सबसे अधिक होती है। फसल को खरपतवारों से मुक्त रखने के लिए गुड़ाई के साथ खरपतवारनाशी जैसे पेंडिमेथेलिन 30 प्रतिशत ईसी 1.33 लीटर प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोलकर रोपाई के तीन दिन के अंदर छिड़काव करें या ऑक्सिफलौरफेन 23.5 प्रतिशत ईसी 250 मिली प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में घोलकर रोपाई के 3 दिन के अंदर छिड़काव करें। यदि खड़ी फसल में खरपतवारों की रोकथाम के लिए क्विजलफॉप इथाइल 4 प्रतिशत+ ऑक्सिफलौरफेन 6 प्रतिशत ईसी 400 मिली प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में घोलकर रोपाई के 20 से 25 दिन बाद छिड़काव करें। प्याज में मौसम, मिट्टी का प्रकार, सिंचाई की विधि और फसल की आयु के आधार पर सिंचाई की आवश्यकता निर्भर करती है।

अपनी खाद, सुरक्षित बीज, लहलहाती फसल

नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

माता भूमि-पुत्रो अहं पृथिव्या! अर्थात धरती हमारी माता है और हम उनके पुत्र। माता-पुत्र के इस पवित्र रिश्ते का सेतु, यानी प्राकृतिक कृषि। खेती का ऐसा स्वरूप जिसमें धरती मां की गोद में ही अपने आसपास उपलब्ध साधनों से ऐसी खाद तैयार करना, जिससे फसल हो सुरक्षित और आमदनी सुनिश्चित। पर्यावरण और खेती-किसानी के क्षेत्र में केंद्र सरकार की यह पहल देश के 80 करोड़ छोटे किसानों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन की बन रही कारक...। लाडफूघाटी, शिमला (हिमाचल प्रदेश) की सत्या देवी के पास डेढ़ सौ सेब के पौधे हैं। वे कहती हैं, मैं अपने पौधों पर अब प्राकृतिक खेती वाला स्प्रे कर रही हूं। पहले दुकानों से खरीदकर रसायनिक स्प्रे करती थी, जिसमें खर्चा ज्यादा आता था। अब खर्चा कम और फल भी अच्छा बन रहा है। इसी तरह किसान मनोज शर्मा भी कहते हैं कि जब से प्राकृतिक खेती शुरू की है, भूमि मुलायम हो गई है। रोहतक (हरियाणा) के फूलकुमार कहते हैं, मैं प्राकृतिक खेती करता हूं और एक ही खेत में पांच तरह के फसल लगाए हैं। इसी तरह गुजरात में खेड़ा के रहने वाले घनश्याम भाई विटठलभाई पटेल पहले रसायनिक खेती करते थे जिसमें खर्च ज्यादा और मुनाफा कम होता था। साथ ही जमीन, पर्यावरण को भी नुकसान पहुंच रहा था। ऐसे में वह प्राकृतिक खेती की ओर मुड़े। पटेल की तरह ही हितेश जमनादास गुजरात में कच्छ के रहने वाले हैं। वे कहते हैं, हम 105 एकड़ में प्राकृतिक खेती करते हैं। यही कारण है कि हमारे आसपास के लोग और किसान हमारे यहां से प्राकृतिक खाना लेने के लिए आते हैं। इससे हमारा मुनाफा भी बढ़ा है। किसानों की ऐसी कहानी अब न सिर्फ खेती के स्वरूप में बदलाव ला रही है, बल्कि उनके जीवन में भी अभूतपूर्व परिवर्तन का कारक बन रही है। देश के किसान अब रसायनिक खाद की खेती को छोड़कर प्राकृतिक खेती की ओर लौट रहे हैं। प्राकृतिक कृषि से देश में नई ऊर्जा का संचार हो रहा है। देश के लाखों किसानों ने इस विधि को स्थापित कर दिया है और गुजरात के डांग जिले को पूरी तरह से प्राकृतिक खेती जिला घोषित कर दिया गया है। देश के कई गांव आज इस ओर परिवर्तित हो रहे हैं, क्योंकि किसानों के जीवन में इससे उन्नति आ रही है। हमें अपनी खेती को कैमिस्ट्री की लैब से निकालकर प्रकृति की प्रयोगशाला से जोड़ना ही होगा। कृषि से जुड़े हमारे इस प्राचीन ज्ञान को हमें न सिर्फ फिर से सीखने की जरूरत है, बल्कि उसे आधुनिक समय के हिसाब से तराशने की भी जरूरत है। इस दिशा में हमें नए सिरे से शोध करने होंगे, प्राचीन ज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक फ्रेम में ढालना होगा।

-ग्रामीण विकास कार्यों का जायजा लेकर दिए निर्देश

सीईओ ने पंचायतों के विकास की टटोली नब्ज

रफी अहमद अंसारी, बालाघाट।

जिला पंचायत सीईओ विवेक कुमार द्वारा जिले में लगातार ग्रामीण क्षेत्रों का भ्रमण किया जा रहा है। इसी कड़ी में उनके द्वारा गत दिवस जनपद पंचायत परसवाड़ा एवं लालबर्रा की विभिन्न ग्राम पंचायतों का भ्रमण किया गया और ग्रामीण विकास के कार्यों का निरीक्षण किया गया। सीईओ द्वारा ग्राम पंचायत शैला में विभिन्न निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया। इस दौरान मनरेगा योजना के अंतर्गत लघुतालाब निर्माण कार्य का निरीक्षण किया गया। जिसमें मेन वाल के पड़ल में काली मिट्टी आवश्यक रूप से डाले जाने के लिए निर्देशित किया गया।

साथ ही डूमर तालाब जीर्णोद्धार कार्य का निरीक्षण कर स्टेप वाइस कार्य के डीपीआर एवं तकनीकी मापदंड की जानकारी उपयंत्री कृष्ण कुमार पन्द्रे से ली गई गई। लेकिन उपयंत्री तकनीकी मापदंड की जानकारी नहीं दे पाए जिस पर सीईओ द्वारा नारजगी व्यक्त की गई एवं तकनीकी जानकारी पर्याप्त रूप से नहीं बताए जाने पर उपयंत्री को कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। सहायक यंत्री मनरेगा को फील्ड में भ्रमण करने और कार्यों का सतत निरीक्षण करने कहा गया। ग्राम में ही ग्रामीणों के साथ चर्चा की गई एवं ग्राम विकास के संबंध में जानकारी ली गई। बच्चों को अच्छी शिक्षा देने, शासन की योजनाओं का लाभ लिए जाने के लिए ग्रामीणों को समझाइश दी गई।

शौचालय भी देखे

ग्राम पंचायत खापा में भी प्रधानमंत्री आवास एवं शौचालय का निरीक्षण किया गया। ग्राम पंचायत चालिसबोड़ी में शासकीय माध्यमिक शाला का निरीक्षण किया गया। शाला में भ्रमण के दौरान शिक्षकों की उपस्थिति भी देखी गई एवं शिक्षकों से बच्चों को घर-घर जाकर पढ़ाई कराने के संबंध में जानकारी ली गई। ग्राम पंचायत चलिसबोडी में स्वास्थ्य विभाग द्वारा आयोजित स्वास्थ्य शिविर का निरीक्षण कर ग्रामीणों को स्वास्थ्य से संबंधित सुविधाएं दिए जाने के संबंध में जानकारी ली गई एवं उनका अच्छे से ईलाज करने तथा दवाई वितरण आदि के संबंध में बीएमओ से चर्चा की गई।

वैक्सीन जरूर लगवाएं

स्वास्थ्य शिविर में स्वास्थ्य विभाग द्वारा बीमारियों की जांच के लिए लगाए गए स्टालों का निरीक्षण किया। उपस्थित ग्रामीणों को कोविड गाइडलाइन का पूर्ण पालन करने के लिए समझाइश दी। उपस्थित ग्रामीणों से वैक्सीनेशन के बारे में चर्चा की। परिवार में सभी सदस्यों को वैक्सीन अनिवार्यत: लगवाने कहा गया।

अधूरे निर्माण कराएं पूरे

जिला पंचायत सीईओ विवेक कुमार द्वारा जनपद पंचायत लालबर्रा के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत नेवरगांव-ला एवं ग्राम पंचायत बहेगांव में सामुदायिक स्वच्छता परिषद निर्माण का निरीक्षण किया गया। निर्माणाधीन कार्य को शीघ्र पूर्ण कराने एवं तकनीकी मापदंड के अनुसार पानी की टंकी आदि के कार्य को पूर्ण कराने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए गए।

पीएम कुसुम योजनाः सरकारी सब्सिडी पर लगावाएं सोलर पंप

भोपाल। सरकार किसानों के सहायता के लिए कई योजनाएं संचालित कर रही है। इसमें से एक पीएम कुसुम योजना भी है। कुसुम योजना के तहत सोलर पंप सब्सिडी 2022 के लिए ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन शुरू किया जा चुका है। प्रधानमंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा और उत्थान महाभियान भारत के पूर्व वित्त मंत्री द्वारा शुरू किया गया है। वर्तमान केंद्र सरकार ने वित्त वर्ष 22 के केंद्रीय बजट में एक बड़ी राशि निर्धारित की है। इसके साथ ही अब तक 3 करोड़ सोलर पंप वितरित किए जा चुके हैं। इस योजना के तहत राजस्थान, यूपी, बिहार, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और अन्य सभी राज्यों में सभी पात्र किसानों को सब्सिडी पर मुफ्त सोलर पंप दिए जाते हैं। यह 90 प्रतिशत सब्सिडी देता है, जिससे पीएम कुसुम योजना के आवेदकों को सिंचाई में मदद मिलेगी और किसानों को लागत प्रभावी खेती के तरीकों के बारे में पता चलेगा। किसानों को लागत का सिर्फ 10 प्रतिशत ही देना होगा। 60 प्रतिशत खर्च सरकार वहन करेगी और शेष 30 प्रतिशत क्रेडिट के रूप में बैंक वहन करेगा। सोलर पंप काफी किफायती हैं। इससे किसानों को अच्छा रिटर्न मिलने के साथ-साथ उनकी मूल आय भी बढ़ेगी। कुसुम योजना का फेज 2 हाल ही में शुरू किया गया है। किसानों को 3 करोड़ सोलर पंप पहले ही आवंटित किए जा चुके हैं।

खेती में ड्रोन के उपयोग को बढ़ावा देने सरकार देगी फंड

भोपाल। खेती हाईटेक हो रही है, खेती में ड्रोन के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए केंद्रीय कृषि मंत्रालय ने कृषि ड्रोन की खरीद, किराए पर लेने और प्रदर्शन में सहायता करके इस तकनीक को किफायती बनाने के लिए वित्त पोषण दिशानिर्देश जारी किए हैं।

कृषि मशीनीकरण पर उप-मिशन (एसएमएएम) योजना में आईसीएआर संस्थानों, कृषि विज्ञान केंद्रों और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा ड्रोन खरीद के लिए अनुदान के रूप में 100 प्रतिशत या 10 लाख रुपये तक अनुदान देने की परिकल्पना की गई है। यह किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) को ड्रोन खरीद के लिए 75 प्रतिशत अनुदान प्रदान करता है। वित्तीय सहायता और अनुदान 31 मार्च, 2023 तक लागू रहेंगे। प्रति हेक्टेयर 6,000 रुपये (वसीयत) कार्यान्वयन एजेंसियों को आकस्मिक व्यय के रूप में दिए जाएंगे जो प्रदर्शनों के लिए ड्रोन किराए पर लेते हैं। ड्रोन प्रदर्शनों के लिए ड्रोन खरीदने वाली कार्यान्वयन एजेंसियों को आकस्मिक व्यय के रूप में 3,000 रुपये प्रति हेक्टेयर दिया जाएगा। सहकारी समिति किसानों, एफपीओ और ग्रामीण उद्यमियों द्वारा स्थापित मौजूदा कस्टम हायरिंग केंद्रों को ड्रोन खरीद के लिए चालीस प्रतिशत या 4 लाख रुपये तक का अनुदान, ड्रोन फेडरेशन ऑफइंडिया के अध्यक्ष स्मित शाह ने कहा। कस्टम हायरिंग सेंटर स्थापित करने वाले कृषि स्नातकों को ड्रोन खरीद के लिए पचास प्रतिशत या 5 लाख रुपये तक का अनुदान। राज्य सरकार के माध्यम से ड्रोन की खरीद के प्रस्तावों को धन आवंटन के लिए योजना की कार्यकारी समिति के विचार के लिए प्रस्तुत किया जाना है।

मशीनों से किसानों को खेती के काम में किसी तरह की परेशानी का नहीं करने पड़ेगा सामना

किसानों के पास 'फ्री कृषि यंत्र' पाने का जबरदस्त मौका, जल्द करें आवेदन

भोपाल। संवाददाता

केंद्र सरकार और राज्य सरकार ने मिलकर किसानों के लिए एक नई योजना शुरू की है, जिसका नाम ई कृषि यंत्र लॉटरी है। इस योजना के तहत किसानों को खेती के काम में किसी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। फ्री कृषि यंत्र योजना में सरकार ने किसानों को सब्सिडी पर कृषि मशीनरी उपलब्ध कराने के लिए एक विशेष योजना शुरू की है। इसी प्रकार मध्यप्रदेश में भी इसी प्रकार की योजना के तहत किसानों को सब्सिडी पर कृषि की व्यवस्था प्रदान की जा रही है। कुछ दिन पूर्व प्रदेश के किसानों की ओर से कृषि यांत्रिकी निदेशालय भोपाल की ओर से किसानों ने पावर लीटर, रीपर कम बाइंडर एवं मल्चर लेजर लैंड एवं लेवलर ब्लेड आदि की मांग की थी। जिसके चलते लॉटरी के माध्यम से किसानों का चयन किया गया है। प्रत्येक राज्य में

किसानों से केवल 10 फीसदी आवेदन ही लिए गए जिसे लॉटरी सूची भी जारी किया गया था।

खेती की मशीनों पर सब्सिडी - मध्य प्रदेश में विभिन्न श्रेणियों के किसानों को विभिन्न प्रकार की योजना के अनुसार 40 से 50 फीसदी अनुदान दिया जाता है। कुछ ई कृषि यंत्र लॉटरी 2022 मशीनें ऐसी हैं कि किसानों द्वारा उनका बहुत कम उपयोग किया जाता है। जिसके कारण ऐसे सभी यात्रियों को सरकार द्वारा पैन सब्सिडी नहीं दी जाती है। चूंकि ऐसी मशीनों की आवश्यकता किसानों को किसी अति आवश्यक कार्य के लिए होती है। मध्य प्रदेश की राज्य सरकार भी ऐसी मशीनों पर किसानों को सब्सिडी देती है।

जरूरत को देखते हुए चुने कृषि यंत्र

मध्य प्रदेश में नि:शुल्क कृषि यंत्र सरकारी योजना के तहत शहर में कृषि मशीनरी का लाभ लेने के लिए किसानों को ई-कृषि यंत्र अनुदान पोर्टल पर अपना नामांकन कराना होगा। मध्य प्रदेश के किसानों को कृषि मशीनरी पर 50प्रतिशत तक लाभ की योजना दी जाती है। इन सात प्रकार की कृषि मशीनरी का लाभ लेने के लिए राज्य के किसान अपनी आवश्यकता के अनुसार अनुदान पर आवेदन करते हैं।

कैसे करें आवेदन

मध्य प्रदेश राज्य के अंतर्गत आने वाले सभी जिले के किसान अपने जिले में कृषि मशीनरी के लिए आवेदन कर सकते हैं। राज्य के सभी किसान अपनी इच्छानुसार किसी भी यंत्र के लिए आवेदन कर सकते हैं। मध्य प्रदेश के किसान ई विभाग का पोर्टल पर क्लिक करके आप कृषि मशीनरी के लिए ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

-कृषि वैज्ञानिक ने दी इसकी पूरी जानकारी

पान की खेती से आएंगे 'अच्छे दिन'

भोपाल। संवाददाता

महोबा का देशावरी पान पूर्व में दुबई, सऊदी अरब, पाकिस्तान और बांग्लादेश सहित दुनिया के दर्जनों देशों में भी काफी पसंद किया जाता रहा है, लेकिन समय के साथ अब यह देश के पश्चिमी उत्तर प्रदेश और दिल्ली मुंबई तक जाता है। इसीलिए आज हम आपको पान की खेती से जुड़ी जरूरी जानकारी दे रहे हैं। पान की बेल को उष्ण कटिबंधीय जलवायु की आवश्यकता होती है। इसकी खेती हाई ग्राउंड के साथ-साथ आर्द्रभूमि में भी की जा सकती है। केरल में, पान की खेती मुख्य रूप से सुपारी और नारियल के बगीचों में एक अंतर फसल के तौर पर की जाती है। अच्छी फसल के लिए जल निकासी वाली उपजाऊ मिट्टी सबसे अच्छी होती है। जलभराव, लवणीय और क्षारीय मिट्टी इसकी खेती के लिए ठीक नहीं हैं। लैटेराइट मिट्टी में भी फसल बहुत अच्छी आती है। इस फसल की सफल खेती के लिए उचित छाया और सिंचाई आवश्यक है। 200 से 450 सेमी तक की वार्षिक वर्षा सबसे बेहतर माना जाता है। फसल न्यूनतम तापमान 10 डिग्री और अधिकतम 40 डिग्री सहन कर सकती है। अत्यधिक कम वायुमंडलीय तापमान के कारण पत्ती गिरती है। गर्म शुष्क हवाएं हानिकारक होती हैं। विश्व में पान की लगभग 100 किस्में हैं, जिनमें से लगभग 40 भारत में और 30 पश्चिम बंगाल में पाई जाती हैं। पान की मुख्य रूप से पांच किस्में हैं। देसावरी, बांग्ला, कपूरी, मीठा और सांची। जबकि कपूरी और सांची में प्रमुख रूप से की जाती हैं। बांग्ला और देस्वरी उत्तर भारत में आमतौर पर मिला करती हैं। सीवी मीठा व्यावसायिक स्तर पर पश्चिम बंगाल में ही उगाया जाता है। यह एक पूंजी और श्रम प्रधान नकदी फसल है।

नवंबर-दिसंबर और जनवरी-फरवरी खेती करें

कृषि वैज्ञानिक डॉ. एसके सिंह के मुताबिक खेत को अच्छी तरह से फल लगाने के लिए तैयार किया जाता है और सुविधाजनक लंबाई के लिए 2 मीटर चौड़ी क्यारियां बनाई जाती हैं। दो आसन्न क्यारियों के बीच में 0.5 मीटर चौड़ाई 0.5 मीटर गहराई की जल निकासी खाई प्रदान करें। यानी अगाथी के बीज लंबी पंक्तियों में लगाएं। क्यारियों के किनारों पर बडें बड़े झाड़ वाले पौधे लगाए जाते हैं, जिनका उपयोग बेलों को सजीव सहारा पर बांधने और पान के पत्ते को पैक करने के लिए किया जाता है। जब अगाथी के पौधे 4 मीटर ऊंचाई तक पहुंच जाते हैं, तो ऊंचाई बनाए रखने के लिए उन्हें सबसे ऊपर रखा जाता है। फसल को अगाथी पौधों पर 180 सेमी चौड़ाई की क्यारियों में पंक्ति में पौधों के बीच 45 सेमी की दूरी के साथ दो पंक्तियों में लगाया जाता है।

इस तरह करें सिंचाई

रोपण के तुरंत बाद या में सप्ताह में एक बार खेत की सिंचाई करें। एक महीने में अंकुरित और बढ़ती है। इस समय, उन्हें मानकों पर पीछे रहना चाहिए। केले के रेशे की मदद से बेल को जीवन स्तर के साथ 15 से 20 सेमी के अंतराल पर ठीक करके सपोर्ट दिया जाता है। लताओं की बढ़ोतरी के आधार पर प्रत्येक 15-20 दिनों के अंतराल पर उसकी जांच की जाती है।

कुछ प्रदेशों की बेहतरीन वैरायटी

आंध्र प्रदेश में करापाकू, चेनोर, तेलाकू, बांग्ला और कल्ली पट्टी, असम में असम पट्टी, अवनी पान, बांग्ला और खासी पान, बिहार में देसी पान, कलकत्ता, पाटन, मघई और बांग्ला कर्नाटक में करियाले, मैसूर और अंबादियाल ओडिशा-गोदी बांग्ला, नोवा कटक, सांची और बिरकोली मध्य प्रदेश में देसी बांग्ला, कलकत्ता और देस्वरी, महाराष्ट्र में कालीपट्टी, कपूरी और बांग्ला (रामटेक) पश्चिम बंगाल में बांग्ला, सांची, मीठा, काली बांग्ला और सिमुराली बांग्ला है।

आंखों के विकार और काली खांसी के इलाज के भी गुण

हमेशा रहती है मांग, बढ़ जाएगी आमदनी

लहसुन की खेती से किसान बन सकते हैं आत्मनिर्भर

भोपाल। संवाददाता

ऐसे कई कारण हैं, जिसकी वजह से लहसुन उगाना फायदे का सौदा साबित हो सकता है। दरअसल, इसकी मांग हमेशा रहती है और साइड इनकम या पार्ट-टाइम नकद कमाने के लिए इस शौक को आसानी से एक लाभदायक छोटे व्यवसाय में बदल सकते हैं, तो आइये जानते हैं लहसुन की खेती से जुड़ी पूरी जानकारी। दरअसल, लहसुन की खेती के लिए अक्टूबर-नवंबर का महीना सबसे अच्छा माना जाता लेकिन इसे किसान और भी सीजन में उगा सकते हैं। दोमट भूमि इसकी खेती के लिए अच्छी होती है। लहसुन का प्रयोग चटनी, सब्जी और अचार में किया जाता है। इसमें पेट की बीमारियों, अपच, कान में दर्द, आंखों के विकार, काली खांसी आदि के उपचार के गुण भी हैं।

जलवायु और भूमि की आवश्यकता

समशीतोष्ण जलवायु लहसुन की खेती के लिए अनुकूल है। हालांकि, बहुत गर्म और बहुत ठंडा मौसम इसकी फसल के लिए अनुकूल नहीं है। लहसुन को समुद्र तल से 1000 से 1300 मीटर की ऊंचाई पर उगाया जा सकता है। यदि बढ़ते मौसम के दौरान वर्षा 75 सेमी से अधिक हो तो फसल की वृद्धि अच्छी नहीं होती है। इसके लिए अक्टूबर के महीने में रोपण करने से अधिक उपज मिलती है। मध्यम गहराई वाली जैविक खाद के साथ मिश्रित दोमट मिट्टी में फसल को अच्छी तरह से उगाया जा सकता है। हल्की मिट्टी, चिकनी मिट्टी इसकी खेती के लिए उपयुक्त नहीं होती है।

लहसुन उगाने का लाभ

प्रति एकड़ में बोवनी की अनुमानित लागत 1200 रुपए है। उर्वरक और कीटनाशकों जैसे अन्य आदानों की लागत 8000 रुपए प्रति एकड़ है और साथ ही निराई और गुड़ाई के लिए भी कुछ पैसे लग ही जाते हैं। ऐसे में 1 एकड़ भूमि में लहसुन के उत्पादन की कुल लागत लगभग 27000 रुपए है। किसान एक एकड़ भूमि से औसतन 32-48 क्विंटल उपज प्राप्त कर सकते हैं। लहसुन का बाजार भाव 5000 रुपए प्रति क्विंटल है। इस तरह 1 एकड़ लहसुन की खेती से किसान 2 लाख रुपए कमा सकते हैं।

लहसुन की किस्में

सूखे मौसम में लहसुन की रोपाई 10-7.5 सेंटीमीटर की दूरी पर की जाती है। पंखुड़ियों या छड़ियों को हटा दिया जाता है और मिट्टी से ढक दिया जाता है। लहसुन में सफेद जामनगर, गोदावरी और श्रेता लहसुन की किस्में लोकप्रिय हैं।

सिंचाई की जरूरत

लहसुन की खेती के लिए रोपण के बाद पहली सिंचाई प्रदान की जानी चाहिए। दूसरी सिंचाई उसके 3-4 दिन बाद और अगले 8 से 12 दिनों में मौसम के आधार पर करनी चाहिए। इसके अलावा फसल होने से दो दिन पहले पानी दें।

कटाई और उत्पादन

यह फसल बोवनी के साढ़े चार से पांच महीने बाद कटाई के लिए उपयुक्त होती है। जब यह पीला हो जाए तो इसका मतलब है कि यह निकालने के लिए तैयार है। बल्बों को बिक्री के लिए काटा जाता है और साफ किया जाता है और आकार के अनुसार छांटा जाता है और बाजार में भेजा जाता है। लहसुन का उत्पादन मिट्टी की बनावट, उर्वरक और विविधता पर निर्भर करता है।

-किसान शुरू कर दें तैयारी

किसानों के लिए वरदान बन सकती हैं बेल वाली फसलें

भोपाल। संवाददाता

खेती से अधिक मुनाफा तभी प्राप्त होता है, जब मौसम के हिसाब से फसल की खेती की जाए, सही मायने में मौसम के अनुसार ही फसलों की खेती करने पर ही उत्पादन अच्छा प्राप्त होता है। मगर कुछ ऐसी फसलें भी होती हैं, जो ठंड के मौसम में अधिक उत्पादन देती हैं, जिससे किसानों को अधिक लाभ मिलता है। बागवानी विभाग के अनुसार बेल वाली फसलों की खेती करें, जिससे किसानों को अधिक उत्पादन के साथ-साथ मुनाफा भी प्राप्त हो सकेगा। वैसे तो सर्दियों के मौसम में बहुत सी सब्जियां उगाई जाती हैं, जिसमे से कुछ के नाम है, जैसे- हरी मिर्च, गाजर, मूली, धनिया, आलू, पालक, मटर, प्याज, शिमला मिर्च, बंद गोभी, साग आदि हैं।

मगर बागवानी विभाग ने किसानों को बेल वाली फसलों जैसे तोरई, घिया, लोकी, टमाटर आदि की खेती करने का सुझाव दिया है। उन्होंने कहा कि किसान भाई इन फसलों की खेत से अधिक मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं। बेल वाली फसल जैसे लौकी की नर्सरी फरवरी के अंत तक तैयार कर सकते हैं। बाजार से अच्छे भाव लेने के लिए लौकी की अगेती और पछेती खेती करना अधिक लाभदायक माना जाता है।

विभाग द्वारा दी गयी सलाह

सब्जियों की खेती करने से पहले किसान उसकी नर्सरी तैयार करें। नर्सरी से तैयार पौधे में लगभग सभी प्रकार के पोषक तत्व देकर एक अच्छा हाइब्रिड लौकी का बीज (पौधा) तैयार कर सकते हैं। नर्सरी का पौधा दो सप्ताह के बाद अंकुरित हो जाता है। पौधे पर चार पत्तियां आने के बाद उसे लगा दें। किसान पहले अपने खेत को अच्छी तरह से तैयार करें। बोवनी के लिए नाली बना लें और एक मीटर बनी नाली में दोनों ओर से अंदर की ओर पौधों को लगाएं।

मिलेगा अनुदान

इसके अलावा बागवानी विभाग की तरफ से सब्जियों के खेत में बांस व तार लगाकर सब्जिया उत्पादन करने पर किसानों को अनुदान दिया जा रहा है। जिसमें प्रति एकड़ 39,250 रुपये अनुदान के रूप में दिए जाते हैं।

होशंगाबाद के मानसिंह ने की 46 प्रकार के देशी गेहूं की बोवनी

सात किस्म का देशी टमाटर तीन पालक भी की तैयार

पांच प्रकार के देशी चना, पांच किस्म की देशी मूंग भी

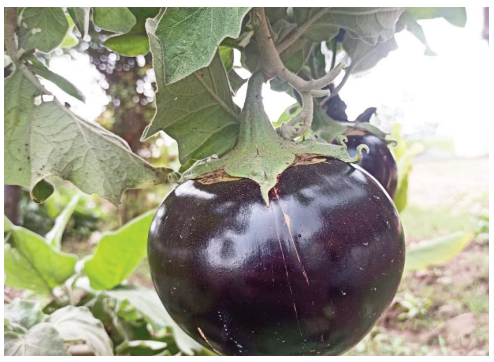

सरकार से दरकार

गौरतलब है कि मप्र में जैविक खेती का रकबा तेजी से बढ़ रहा है। राज्य सरकार भी जैविक खेती को बढ़ा देने के लिए कह रही है। लेकिन मानसिंह गुर्जर जैसे किसानों को सरकार की योजनाओं का कोई लाभ नहीं मिल पा रहा है। अगर सरकार योजनाओं का लाभ दिलाए तो वो दिन दूर नहीं जब मप्र का किसान जहर मुक्त खेती करने लगेगा।

पंकज शुक्ला, होशंगाबाद।

मध्यप्रदेश में जहर मुक्त खेती के लिए चर्चित होशंगाबाद के प्रगतिशील किसान मानसिंह गुर्जर एक बार फिर चर्चा में हैं। दरअसल, मानसिंह गुर्जर ग्राम गरधा तहसील बनखेड़ी में पिछले 12 साल से सुभाष पालेकर नेचुरल फार्मिंग (जैविक खेती)कर रह हैं। यही नहीं, देशी बीजों का सरक्षण और संवर्धन कर उन्हें बचाने का कार्य भी कर रहे हैं। इसमें सबसे बड़ी बात यह है कि मानसिंह किसानों को नि:शुल्क देशी बीज भी देते आ रहे हैं। 'जागत गांव हमार' से चर्चा के दौरान प्रगतिशील किसान मानसिंह गुर्जर ने बातया कि इस साल उनके यहां नेचुरल फार्मिंग में 46 प्रकार के देशी गेहूं की बैरायटी की बोवनी की है, जो देशी गेहूं दुर्लभ बैरायटी के हैं। हजारों साल पहले की बैरायटी उनके नेचुरल फर्म पर सात फीट लंबी लौकी, तीन फीट लंबी गिल्की, तीन फीट लंबी तुराई, चार फीट लंबी ककड़ी, दो से तीन किलो वजन का हरा बैगन, दो किलो का काला बैगन, दो फीट लंबा बासुकी बैगन लगाया है। साथ ही सात प्रकार का देशी टमाटर, तीन प्रकार की देशी पालक, दो प्रकार की मेथी, तीन तरह की देशी मिर्च, दो प्रकार कीदेशी हल्दी, दो प्रकार की धनिया कलौंजी, पांच प्रकार के देशी चना, पांच प्रकार की देशी मूंग, 20 किलो का काशी फल, 10 किलो का देशी तरबूज का भी उत्पादन ले रहे हैं। मान सिंह गुर्जर देशी बीजों को बचाने का कार्य सालों से करते आ रहे हैं। उनके नवाचारों को देखकर स्थानीय किसानों का भी रुझान जैविक खेती की ओर तेजी से बढ़ रहा है।

प्रशिक्षणों के माध्यम से पशुपालकों को किया जा रहा दक्ष

पशुपालन से होगा किसानों की आय में हुआ इजाफा

खेमराज मौर्य, शिवपुरी।

भारत सरकार के मछली, पशुपालन एवं डेयरी मंत्रालय से प्राप्त लक्ष्य तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-अटारी, जबलपुर से मिले निर्देशों के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र, शिवपुरी द्वारा डेयरी एवं पशुपालन व्यवसाय को लाभकारी बनाने के लिए जिले के विभिन्न विकास खंडों में पशुपालकों, बकरी पालकों और मुर्गी पालकों के लिए 'क्षमता निर्माण प्रशिक्षण' का आयोजन किया जा रहा है। प्रशिक्षणों के माध्यम से वैज्ञानिकों द्वारा पशुपालन की उन्नत वैज्ञानिक तकनीकी से ग्रामीण पशुपालक रूबरू होकर लाभ उठा रहे हैं। केंद्र द्वारा अब तक जिले के चार विकास खंडों में 360 से अधिक पशुपालकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है। प्रशिक्षण के दौरान व्यावहारिक रूप से प्रशिक्षित करने के लिए प्रशिक्षणार्थी पशुपालकों के पशुओं को वैज्ञानिकों द्वारा कृमिनाशी दवा भी पिलाई जा रही है।

पशुपालकों को मुख्य प्रशिक्षक के तौर पर केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. एसपी सिंह (पशुपालन एवं डेयरी) द्वारा क्षमता निर्माण प्रशिक्षण प्रदान किए जा रहा हैं। इस संबंध में केवीके प्रमुख डॉ. एसपी सिंह ने बताया कि लक्ष्य के तहत केंद्र को पांच प्रशिक्षणों तथा 200 पशुपालकों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य दिया गया था। जिसमें केंद्र द्वारा जिले के अलग-अलग विकास खंडों में अब तक चार प्रशिक्षण आयोजित करके 360 से अधिक पशुपालक, बकरी पालक एवं मुर्गी पालकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

बकरी पालन की दी जानकारी

आयोजित प्रशिक्षणों के क्रम में क्रमश: करैरा ब्लाक के मामौनी खुर्द गांव में बकरी पालन प्रशिक्षण का आयोजन करके बकरी पालक महिलाओं को जानकारी दी गई। बदरवास ब्लाक के इंदार गांव में डेयरी पशुओं का प्रजनन प्रबंधन तथा नरवर ब्लाक के मायारामपुरा गांव में दुधारू गाय और भैंसों में दुग्ध उत्पादन के लिए संतुलित आहार का महत्व विषयों पर व्यावहारिक प्रशिक्षण आयोजित किए गए हैं।

कड़कनाथ पालन का पढ़ाया पाठ

वहीं पोहरी ब्लाक के आदिवासी गांव में मुर्गी पालकों को कड़कनाथ मुर्गी पालन विषय पर प्रशिक्षण दिया गया है। शेष बचे एक प्रशिक्षण का आयोजन फरवरी माह में प्रस्तावित है। डॉ. सिंह ने बताया कि प्रशिक्षणों को व्यावहारिक बनाने के लिए प्रशिक्षणार्थियों की गाय, भैंस एवं बकरियों को पेट के कीड़ों की क्रमिनाशी दवा नि:शुल्क खिलाई एवं पिलाई गई है। साथ ही मुर्गी पालकों को भी मुर्गियों से अधिक लाभ लेने तथा उन्हें स्वस्थ्य रखने के लिए दवा वितरित की गई है।

वर्मी कम्पोस्ट का जगाया अलख| सभी प्रशिक्षण तीन दिवसीय आयोजित किए गए हैं जिसमें प्रशिक्षणार्थियों को स्टेशनरी, भोजन-नास्ता आदि भी उपलब्ध कराया गया है। इसी क्रम में सहायक प्रशिक्षण के रूप में वर्मी कम्पोस्ट तकनीकी पर किसान-पशु पालकों को एक तीन दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित भी किया गया है। प्रशिक्षणों में केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एसएस कुशवाह, डॉ. एमके भार्गव, वैज्ञानिक डॉ. एएल बसेडिया, डॉ. पुष्पेंद्र सिंह, जेसी गुप्ता, एनके कुशवाह, विजय प्रताप सिंह कुशवाह, सतेंद्र गुप्ता आदि द्वारा पूर्ण सहयोग देकर प्रशिक्षणों को सफल बनाया।

बकरी पालन के लिए बिना किसी रिस्क के लें लोन

अगर पशुपालन की बात करें, तो इसमें सबसे अधिक मुनाफेदार बकरी पालन करना है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक अपनाया जाता है, लेकिन आजकल शहरी क्षेत्रों में भी बकरी पालन का चलन काफी तेजी से आगे बढ़ रहा है। दरअसल, आजकल हर कोई बकरी पालन की जानकारी रखता है, लेकिन कई लोग ऐसे भी हैं, जो बकरी पालन करना चाहते हैं, लेकिन आर्थिक तंगी की वजह से शुरू नहीं कर पाते हैं। ऐसे में हम आज बकरी पालन शुरू करने के लिए लोन लेने की जानकारी लेकर आए हैं। बहुत कम लोग जानते होंगे कि बकरी पालन करने के लिए लोन भी उपलब्ध कराया जाता है। अगर कोई भी बकरी पालन की शुरुआत करना चाहता है, तो इस लेख को पढ़ने से उसे बकरी पालन करने में मदद मिलेगी।

बकरी पालन के लिए लोन

अगर किसान या कोई भी बेरोजगार युवा 20 बकरियों का पालन करना चाहता है, तो इसके लिए लोन एवं सरकार से अनुदान ले सकते हैं। बस बकरी पालन प्रोजेक्ट रिपोर्ट में यह बताना होगा कि वह किस जगह पर बकरी पालन करना चाहता है। बकरी पालन करने वाली जमीन उसकी है या वह किराए पर लेकर फार्म शुरू करेगा। इसके अलावा गोट फार्म के लिए कितनी भूमि का इस्तेमाल करेगा। उसमें बकरी आवास के निर्माण में कितना खर्च आएगा। यह पूरी जानकारी देनी होगी।

किसान बकरी पालन से आय कर सकते हैं दोगुनी

सीएसए के वैज्ञानिक ने बताया जोखिम न के बराबर

इधर, कानपुर, चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि (सीएसए) के प्रसार निदेशालय ने पशुपालन में किसानों की आय दोगुनी करने का फॉर्मूला बताया। वैज्ञानिक डॉ. सोहन लाल वर्मा ने अपने शोध से बकरी पालन और उसके फायदे बताए। निदेशालय केंद्र सरकार की योजना के तहत 2022 तक किसानों की आय दोगुनी करने के लिए लगातार शोध कार्य कर रही है। डॉ. सोहन बताते हैं प्राकृतिक आपदा आने पर किसानों की आजीविका का मुख्य साधन पशुपालन ही होता है। अध्ययन करके उन्होंने बकरी पालने के कई फायदे गिनाए। उन्होंने बताया कि बकरी को गरीबों की गाय कहा जाता है। जो किसान अधिक पैसे वाले नहीं होते हैं, उनके लिए बकरी पालन में बेहतर विकल्प है। इसको पालने के लिए कोई विशेष तकनीक की जरूरत नहीं होती। बकरी के चारे पानी की व्यवस्था सूखा पड़ने पर भी आराम से हो जाती है। इसका दूध कई रोगों में लाभदायक होता है। छोटे किसान इसे घर में या झोपड़ी में किसी एक कोने में बांधकर इसकी परवरिश कर सकते हैं। बकरी की उन्नतशील प्रमुख नस्लें जमुनापारी, बरबरी और ब्लैक बंगाल प्रमुख हैं। बकरी अमूमन डेढ़ वर्ष में गर्भधारण करने में सक्षम होती है। एक बार में दो से तीन बच्चे देती है। इसके पालन करने से किसान को दो से ढाई वर्ष में बेहद कम लागत में पर्याप्त आय हो जाती है। बकरी पालन में किसी विशेष तकनीकी की जरूरत नहीं पड़ती। वर्तमान में बकरे आदि के मांस की काफी मांग है।

बकरी पालन के प्रति बढ़ी दिलचस्पी

फायदे का सौदा 'बकरी पालन योजना'

देश में बेरोजगारों की संख्या हर साल बढ़ता ही जा रहा है। बड़े पैमाने पर नौकरियां नहीं होने के कारण अब अधिकतर युवा अपना खुद का बिजनेस शुरू करने की तरफअधिक ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। ऐसे कई उदाहरण देखने को मिले हैं जहां शहरों में पढ़ाई-लिखाई करने के बाद ग्रामीण क्षेत्र में जाकर युवाओं ने अपना फॉर्म खोला और उससे सफलतापूर्वक चला रहे हैं। हम आपको बकरी पालन के बारे में बताने जा रहे हैं। पिछले कुछ सालों में बड़े पैमाने पर पशु पालन की तरफलोगों की रुचि देखने को मिली है। इसी क्रम में बकरी पालन भी आता है जिससे कर आजकल लोग अच्छी खासी आमदनी अर्जित कर रहे हैं। यही वजह है कि देश में बीते पांच साल में बकरियों की संख्या में इजाफा देखने को मिला है। आने वाले समय में इस पेशे में और लोगों के आने की आपास संभावनाएं हैं। बकरी पालन के प्रति पिछले कुछ सालों में लोगों की दिलचस्पी बढ़ी है। बकरी पालन में आवास और प्रबंधन पर कम खर्च करना पड़ता है। लिहाजा इसे कम आय में भी शुरू किया जा सकता है। बकरी या भेड़ पालन से लागत के मुकाबले आमदनी ज्यादा होती है। गांवों में रोजगार को बढ़ाने के लिए बकरी पालन शुरू करने के लिए सरकार की ओर से भी सब्सिडी दी जाती है।

सरकार कर रही मदद

केंद्र सरकार ने बकरी पालन को बढ़ावा देने के लिए 'राष्ट्रीय पशुधन मिशन' शुरू किया गया है। नेशनल लाइव स्टॉक मिशन के तहत देश में पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए किसानों को सब्सिडी दी जाती है। नेशनल लाइव स्टॉक मिशन में बहुत सारी योजनाएं हैं, जिसमें अलग-अलग योजना के लिए अलग-अलग सब्सिडी दी जाती है। मिशन के तहत अलग-अलग राज्य सरकारों की सब्सिडी की मात्रा भी अलग-अलग होती है, क्योंकि, यह केंद्र की योजना है लेकिन कई राज्य सरकारें इसमें अपनी तरफसे सब्सिडी में कुछ अंश को जोड़ देती हैं जिससे सब्सिडी की अमाउंट बढ़ जाती है।

ऐसे करे बकरी पालन की शुरुआत

अगर बकरी पालन में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं तो शुरुआत करने के लिए एप्लीकेशन लिखकर विकास खंड के पशु चिकित्सा अधिकारी के पास जमा कर सकते हैं। पशु चिकित्सा अधिकारी अपने यहां आई एप्लीकेशन में से कुछ एप्लीकेशन चुनता है। अब इन एप्लीकेशंस को जिला स्तरीय जिला पशुधन मिशन समिति के पास भेजा जाता है। आखिरी चयन यही समिति करती है।

बजट 2022-23: सेंटर फॉर ऑयल इंडस्ट्री एण्ड ट्रेड ने की मांग

सरसों की खेती को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार तैयार करे बफर स्टॉक

-सेंटर फॉर ऑयल इंडस्ट्री एण्ड ट्रेड ने केन्द्र सरकार से की मांग

भोपाल। सेंटर फॉर ऑयल इंडस्ट्री एण्ड ट्रेड ने सरसों की खेती को बढ़ावा देने के लिए केन्द्र सरकार से सरसों का बफर स्टॉक तैयार करनी की मांग की है। उनकी मांग है कि आगामी बजट में इसे शामिल किया जाना चाहिए। केन्द्र सरकार को दालों की तरह सरसों के बीजों का भी बफर स्टॉक तैयार करना चाहिए। यह स्टॉक कम से कम 2.5 मिलियन टन तक तैयार किया जाना चाहिए। इससे घरेलू उत्पादन को बढ़ावा मिलेगा और खाना पकाने में काम आने वाले तेलों का निर्यात कम किया जा सके। सरकार से यह मांग सेंटर फॉर ऑयल इंडस्ट्री एण्ड ट्रेड ने की है। बफर स्टॉक के प्रस्तावित निर्माण के लिए खरीद, फसल के मौसम की शुरुआत में बाजार कीमतों पर की जानी चाहिए,

जिससे ऑयल प्रोसेसिंग यूनिट्स साल भर अपना संचालन जारी रख सकेंगी। वनस्पति तेलों के लिए सर्वोच्च संस्था कोइट चाहती है कि सरकार कच्चे खाद्य तेलों एवं रिफाइन्ड खाद्य तेलों की इम्पोर्ट ड्यूटी के बीच के अंतर को दूर करे। भारत ने अक्टूबर में समाप्त होने वाले तेल विपणन वर्ष 2020-21 के दौरान अब तक का सबसे अधिक, 1.17 लाख करोड़ के खाद्य तेलों का आयात किया, इसकी वजह दुनिया भर में कीमतों में बढ़ोतरी देखी गई। सीओओआईटी के अनुसार समय आ गया है कि केन्द्र एवं राज्य सरकारें तेलबीजों का घरेलू उत्पादन बढ़ाने पर ध्यान दे। सीओओआईटी के चेयरमैन, सुरेश नागपाल ने कहा कि हम चाहते हैं कि सरकार आगामी बजट में एक समर्पित योजना लेकर आए, जिसके द्वारा किसानों को विभिन्न तेलबीजों जैसे सरसों, सोयाबीन और सूरजमुखी की बुवाई के लिए प्रोत्साहित करने के लिए उचित आवंटन निर्धारित किया जाए।

बोवनी में 25 फीसदी बढ़ोत्तरी का अनुमान

अगस्त 2021 में सरकार ने नेशनल मिशन ऑन एडिबल ऑयल्स- ऑयल पाम को लॉन्च किया था, जिसके तहत पाम ऑयल के घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए 11,040 करोड़ का वित्तीय आउटले तय किया गया था। इसी तरह की पहल सरसों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए भी की जानी चाहिए। सरकार सरसों की खेती को बढ़ावा देने के लिए प्रयासरत है, जिसके परिणाम भी दिखने लगे हैं। इस साल सरसों की बोवनी के क्षेत्र में 25 फीसदी तक बढ़ोतरी का अनुमान है और उम्मीद की जा रही है कि सरसों का उत्पादन भी 110 लाख टन तक पहुंच जाएगा। सुरेश नागपाल ने बताया कि अगर सरकार सरसों के लिए 25 लाख टन का बफर स्टॉक तैयार कर लेती है, तो इससे सरसों की खेती को बढ़ावा मिलेगा और साथ ही सरसों की कीमतों में ज्यादा उतार-चढ़ाव आने पर भी कीमतें स्थिर बनी रहेंगी, जैसा कि साल 2021 के दौरान हुआ था।

अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को किया गुमराह, बताया- 2005 से 2019 तक 2437 वर्ग किमी वन बढ़े

मप्र के 38 जिलों में फॉरेस्ट की तीनों श्रेणियां मिलाकर फॉरेस्ट कवर घटा

भोपाल। विशेष संवाददाता

मध्यप्रदेश में वन क्षेत्र कितने साल में कितना बढ़ा या घटा, इसका सही आंकड़ा सरकारी अफसरों की जल्दबाजी में लड़खड़ा गया है। दरअसल, तीन जनवरी को वन विभाग के अफसरों ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के सामने प्रेजेंटेशन दिया था। इसमें बताया गया कि 2005 से 2019 के बीच प्रदेश में अत्यधिक घना वन (सघन वन) 2437 वर्ग किमी बढ़ा है। जबकि आईएसएफआर-2009 में साफ हो गया था कि 2007 में ही 2408 वर्ग किमी सघन वन बढ़ चुके हैं। अधिकारियों ने शाबाशी हासिल करने के लिए 2007 की बजाए 2005 से आंकड़े लेकर प्रेजेंटेशन तैयार कर लिया। 2007 के बाद सघन वन 29 वर्ग किमी ही बढ़े। तीन जनवरी के इस प्रेजेंटेशन के 10 दिन बाद जारी इंडियन स्टेट ऑफ फॉरेस्ट की 2021 की रिपोर्ट बताती है कि उपरोक्त 29 वर्ग किमी में से प्रदेश में 11.05 वर्ग किमी सघन वन घट गए हैं। घने वनों में भी 131.98 वर्ग किमी का दायरा कम हो गया।

तीन श्रेणियों में वनों की गणना

आईएसएफआर तीन श्रेणियों में वनों की गणना करता है। अत्यधिक घना वन, घना वन और खुले वन। साथ ही हर दो साल में रिपोर्ट जारी करता है। प्रत्येक रिपोर्ट में पिछली रिपोर्ट से तुलना होती है। वर्ष 2005 के बाद 2007 की रिपोर्ट ही जारी नहीं हुई। 2009 की रिपोर्ट में 2005 और 2007 के आंकड़ों को जिक्र किया गया है। प्रदेश के वन बल प्रमुख रमेश कुमार गुप्ता के मुताबिक सघन वन घटने की वजह विकास के कामों में जा रही जमीनों का दबाव है।

आंकड़ों में किया खेल

आईएसएफआर-2009 की रिपोर्ट में 2005 से 2007 तक वनों की स्थिति बताई है। इसमें अत्यधिक घने वन 6,647 वर्ग किमी, घने वन 35007 वर्ग किमी तथा खुले वन 36,046 किमी बताए गए हैं। 2019 की रिपोर्ट में अत्यधिक घने वनों का आंकड़ा 6676 वर्ग किमी बताकर कहा गया कि 2005 की तुलना में 2437 वर्ग किमी दायरा बढ़ा है। जबकि 2007 की रिपोर्ट में 2005 के आंकड़ों से तुलना बताई गई है, तब भी अत्यधिक घने वन का आंकड़ा 6647 वर्ग किमी ही था। मप्र के जंगलों में आग की घटनाएं तीन गुना तक बढ़ गई हैं। सर्वाधिक घटनाएं फरवरी से जून के बीच हुई हैं। आईएसएफआर की ताजा रिपोर्ट बताती है कि नवंबर 2020 से जून 2021 के बीच जंगल में आग की 47 हजार 795 घटनाएं रिपोर्ट की गई हैं।

भ्रष्टाचार का धान: दो केंद्र पर धान खरीदी में 1.36 करोड़ का घोटाला

संवाददाता, सागर। जिले में खाद्यान वितरण व खरीदी में जमकर भ्रष्टाचार हो रहा है। अब धान खरीदी में घोटाला किया जा रहा है। अभी तक प्रशासन दो ही केन्द्रों की जांच करा सका और 1 करोड़ 36 लाख की गबन पकड़ में आ गया। यदि जिले के अन्य खरीदी केन्द्रों की भी इसी तरह जांच की जाए तो अन्य केन्द्रों पर भी खरीदी में किया गया घोटाला पकड़ में आ जाएगा।

वहीं धान खरीदी में हुए घोटाले में अब तक चार लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की जा चुकी है। इन चारों आरोपियों को सेवा से बर्खास्त करने के निर्देश भी कलेक्टर ने दिए हैं। समर्थन मूल्य पर धान खरीदी में जिले में दो केन्द्रों पर अब तक जांच में 1 करोड़ 36 लाख का गबन सामने आ चुका है। धान खरीदी में हुए इस फर्जीवाड़े के खिलाफ कलेक्टर दीपक आर्य के निर्देश पर चार आरोपियों के विरुद्ध सानौधा थाने में मामला दर्ज किया गया है। कलेक्टर जांच के बाद ढाना के दोनों कर्मचारियों को सेवा से बर्खास्त करने के निर्देश जिला पंजीयक को पहले ही दे चुके हैं। कलेक्टर ने बन्नाद-बम्हौरी के भी दोनों कर्मचारियों को जांच के बाद बर्खास्त करने के निर्देश जिला पंजीयक को दिए।

-आईसीएआर-राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र ने शुरू किया पोर्टल

किसान घर बैठे ऑनलाइन खरीदें मसाला फसलों के बीज

भोपाल/नई दिल्ली। संवाददाता

धनिया, मेथी, सौंफ जैसी फसलों की खेती करने वाले किसानों को बीज के लिए अब परेशान नहीं होना होगा, घर बैठे वो ऑनलाइन बीज मंगा सकते हैं। इसके लिए उन्हें बस ऑनलाइन भुगतान करना होगा। राजस्थान के अजमेर में स्थित राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र ने बीजीय मसालों की बीजों के लिए ऑनलाइन पोर्टल शुरू किया है। साथ ही किसान चाहें तो एसबीआई के योनो कृषि एप माध्यम से भी खरीददारी कर सकते हैं। राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र के प्रभारी निदेशक डॉ. एसएन सक्सेना का कहना है कि अभी तक किसान को बीज खरीदना होता था तो उसे अनुसंधान केंद्र पर आना पड़ता था। इससे राजस्थान और कुछ दूसरे राज्यों किसानों तक ही बीज की पहुंच थी, इसलिए हमने ऑनलाइन पोर्टल शुरू किया है, जिसके माध्यम से देश के किसी भी राज्य का किसान बीजों को खरीद सकता है। साथ ही हमने इस पोर्टल को एसबीआई के योनो कृषि एप से भी कनेक्ट किया है। वहां से भी किसान ऑर्डर कर सकते हैं, क्योंकि बहुत से किसानों को पोर्टल पर खरीददारी करने में परेशानी होगी, लेकिन ज्यादातर किसानों का बैंक खाता एसबीआई रहता है, इससे वो आसानी से ऑर्डर कर सकते हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान के बाद भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र देश का दूसरा ऐसा संस्थान है, जिसके बीज पोर्टल को भारतीय स्टेट बैंक के योनो कृषि एप से जोड़ा गया है। इससे देश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में रहने वाले किसान भी डिजिटल माध्यम से बीज खरीदकर बीजीय मसाला फसलों की खेती कर सकेंगे।

योनो कृषि एप के फायदे

योनो कृषि एप का यह फायदा है इससे किसी दूसरे राज्य का भी किसान ऑर्डर कर सकता है, क्योंकि यह ऐप हिंदी और अंग्रेजी के साथ 10 अन्य भाषाओं में उपलब्ध है। अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन द्वारा सूचीबद्ध 109 मसालों में से, भारत अपने विविध कृषि-जलवायु क्षेत्रों के कारण 63 मसालों का उत्पादन करता है। भारत में उगाए गए कुल 63 मसालों में से 20 मसालों को वार्षिक जड़ी-बूटियों के रूप में प्रतिष्ठित बीज मसालों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, जिनके सूखे बीज या फलों का उपयोग मसालों के रूप में किया जाता है।

बीज की 26 किस्में विकसित

बीज मसाले देश के मसाला उत्पादन का 45 प्रतिशत क्षेत्र और 18 प्रतिशत हिस्सा साझा करते हैं। भारत के मुख्य बीज मसाले हैं धनिया, जीरा, सौंफ, मेथी, सोआ, अजवाइन, अजवाइन, कलौंजी और जीरा। इन मसाला बीजों को कर सकते हैं ऑर्डर ऑनलाइन पोर्टल पर किसान राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केंद्र द्वारा विकसित बीजीय मसाला फसलों के बीज मंगा सकते हैं। इसमें सौंफ, जीरा, मेथी, कलौंजी, सोया, धनिया, अजवाइन, अजमोद, स्याह जीरा जैसी बीजीय मसालों की अलग-अलग उन्नत किस्मों को ऑनलाइन ऑर्डर कर सकते हैं। केंद्र ने 8 बीज मसाला फसलों की 26 किस्में विकसित की हैं।

आवश्यकता

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर और मुरैना से प्रकाशित

जागत गांव हमार

कृषि और पंचायत पर आधारित साप्ताहिक समाचार पत्र के लिए जिला, जनपद स्तर पर संवाददाता चाहिए।

संपर्क करें

जबलपुर, प्रवीण नामदेव-9300034195
शहडोल, राम नरेश वर्मा-9131886277
नरसिंहपुर, प्रहलाद कौरव-9926569304
विदिशा, अवधेश दुबे- 9425148554
सागर, अनिल दुबे-9826021098
राहतगढ़, भगवान सिंह प्रजापति-9826948827
दमोह, बंटी शर्मा -9131821040
टीकमगढ़, नीरज जैन -9893583522
राजगढ़, गजराज सिंह मीणा -9981462162
बैतूल, सतीष साहू-8982777449
मुरैना, अवधेश दण्डोतिया -9425128418
शिवपुरी, खेमराज मौर्य-9425762414
भिण्ड- नीरज शर्मा-9826266571
खरगौन, संजय शर्मा-7694897272
सतना, दीपक गौतम-9923800013
रीवा-धनंजय तिवारी-9425080670
रतलाम, अमित निगम-70007141120
झाबुआ-नोमान खान-8770736925

कार्यालय का पता:- लाजपत भवन प्रथम तल, आईसीआईसीआई बैंक के पास, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल, मप्र,
संपर्क करें- 07554064144, 9229497393, 9425048589

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, स्थानीय संपादक- **अरविंद मिश्र, संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)